

## बौद्धचर्या-विधि





तथागत बुद्ध, अशोक मिशन, नई दिल्ली



# बौद्धचर्या-विधि

संकलनकर्ता  
लामा लोबजुङ्ग



अशोक मिशन  
नई दिल्ली

## About the book

The present book *Bauddha Cariyā Vidhi* (daily Buddhist Chants) is a compilation of the daily practices which a devout Buddhist should follow in his day to day life. This short book is compiled by Asoka Mission, a Buddhist organization based at New Delhi, to inspire and help millions of devout from Shakya and Maurya community who have embraced Buddhism besides the follower of Dr Baba Sahib Ambedkar who are diligently following the Middle Path as shown by Lord Buddha.

The book is divided into eight chapters. The first chapter is *Vandanā Pariccheda* (chapter on prayer) which contain the prayers to the triple gem along with salutation to the stupa and to the Bodhi Tree. The second chapter *Pūjā Pariccheda* (chapter on worship) gives in brief methods of worshipping the Buddha etc. The third chapter *Śīla Pariccheda* (chapter on precepts) mentions as to how a person should take five precepts and eight precepts etc. Chapter four, *Paritrāṇa Pariccheda* (chapter on *Paritta Sutta* on protection) presents some of the *Paritrāṇa* chanting like *Mahā Mangal Sutta*, *Ratana Sutta*, *Karaṇiya Metta Sutta* from the Pali Tipitaka. Chapter five *Śhikshā Pariccheda* (chapter on important teachings of the Buddha) gives in brief the important teaching of the Buddha like, the Four Noble Truth, Eight Fold Path, and Law of Dependent Origination etc.

The sixth chapter *Sanskāra Pariccheda* deals with various ceremonies which a devout Buddhist should adopt in his day-to-day life. The seventh chapter is *Tyauhāra Pariccheda* (chapter on festivals) which gives in brief the various festivals which a devout Buddhist should practice during the year. The last or the eight chapter is *Tīrtha Pariccheda* (chapter on pilgrimage) which gives in brief about the pilgrimage places which a devout Buddhist should visit during his life time. There is photo gallery of important Buddhist heritage places at the end of the book.

# Daily Buddhist Chants

*Compiled by*  
**Lama Lobzang**



**Ashok Mission**  
**New Delhi**

© 2017, अशोक मिशन, नई दिल्ली

यह पुस्तक निःशुल्क वितरण के लिए है।

This Book is for free distribution.

प्रकाशक :

अशोक मिशन, नई दिल्ली-110030

दूरभाष: 011-64619584

ई-मेल: asokamission2@gmail.com

वेबसाइट: www.asokamission.com

मुद्रक : स्वतन्त्र भारत प्रेस, दिल्ली

Printed for free distribution by

**The Corporate Body of the Buddha Educational Foundation**

11F., 55 Hang Chow South Road Sec 1, Taipei, Taiwan, R.O.C.

Tel: 886-2-23951198, Fax: 886-2-23913415

Email: overseas@budaedu.org

Website: http://www.budaedu.org

Mobile Web: m.budaedu.org

**This book is strictly for free distribution, it is not to be sold.**

यह पुस्तिका विनामूल्य वितरण के लिए है बिक्री के लिए नहीं।



## विषय-सूची

अध्याय एक	वन्दना परिच्छेद	1
	त्रिरत्न वन्दना	1
	बुद्ध-वन्दना	1
	धर्म-वन्दना	2
	संघ-वन्दना	3
	चैत्य-वन्दना	4
	बोधि-वन्दना	4
अध्याय दो	पूजा परिच्छेद	6
	बुद्ध-पूजा	6
	पुष्प-पूजा	6
	धूप-पूजा	6
	सुगन्धि-पूजा	6
	प्रदीप-पूजा	7
	आहार-पूजा	7
	संकल्प	7
अध्याय तीन	शील परिच्छेद	9
	धर्म याचना	9
	नमस्कार	10
	त्रिशरण	10
	पञ्चशील	10
	अष्टशील	11
अध्याय चार	परिव्राण परिच्छेद	13
	आवाहन	13

		18
	महामङ्गल सुत्त	14
	रत्नसुत्त	16
	करणीयमेत्त सुत्त	22
	पुण्यानुमोदन	24
अध्याय पाँच	शिक्षा परिच्छेद	26
	चार आर्यसत्य अष्टाङ्गिक मार्ग	26
	प्रतीत्य समुत्पाद	29
	अनुलोम	29
	पटिलोम	29
	बुद्ध वचन	30
अध्याय छः	संस्कार परिच्छेद	34
	गब्भमङ्गल	34
	नामकरण	34
	अन्नपासन	34
	केसकप्पन	35
	कण्णविज्जन	35
	विज्जारम्भ	35
	विवाह	36
	पति के कर्तव्य	36
	पत्नी के कर्तव्य	36
	प्रव्रज्या	37
	उपसम्पदा	37
	दाहकम्म तथा मतकभत्त	38
अध्याय सात	त्थौहार परिच्छेद	41
	वैशाखी पूर्णिमा	41
	ज्येष्ठ पूर्णिमा	41
	आषाढी पूर्णिमा	41
	आश्विन पूर्णिमा	42

## बौद्धचर्या-विधि

11

माघी पूर्णिमा	42
नाग पंचमी	42
विजया दशमी	42
दीपावली	42
वसन्त	43
होली	43
अध्याय आठ	
तीर्थ परिच्छेद	44
महत्त्वपूर्ण बौद्ध तीर्थस्थल (चित्र वीथिका)	47



## प्राक्कथन

जैसा कि सर्वविदित है, सिद्धार्थ गौतम का जन्म वैशाख पूर्णिमा के दिन लुम्बिनी (आज के नेपाल में) शाल वृक्ष के नीचे हुआ था। उनकी माता का नाम माया देवी, पिता शुद्धोदन शाक्य गणराज्य के राजा थे।

बोधगया में वैशाख पूर्णिमा के दिन सम्यक् सम्बोधी प्राप्त करने के उपरान्त चालीस वर्षों तक सिद्धार्थ गौतम बुद्ध ने 'बहुजन हिताय बहुजन सुखाय, लोकानुकम्पाय .....' के उद्देश्य से न केवल समस्त मानव जाति के कल्याण हेतु अपितु समस्त जीवों की मंगल कामना के उद्देश्य से दुःख मुक्ति का मार्ग दिखाया। अस्सी वर्ष की आयु में दो शाल वृक्षों के मध्य वैशाख पूर्णिमा के दिन महापरिनिर्वाण प्राप्त किया। इसलिए वैशाख पूर्णिमा का दिन बौद्धानुयायियों के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है। यह दिन बुद्ध पूर्णिमा के नाम से मनाया जाता है। इस दिन सिद्धार्थ गौतम का जन्म हुआ था, उन्होंने बोधगया में सम्यक् सम्बोधी प्राप्त की तथा कुशीनगर में महापरिनिर्वाण प्राप्त किया।

उनके महापरिनिर्वाण के पश्चात् राजगृह (आज के राजगीर) में स्थित सप्तपर्णी गुफा में 'प्रथम बौद्ध धर्म संगीति' का संगायन किया गया। इस संगीति में पाँच सौ अर्हत भिक्षुओं ने महाकश्यप थेर की अध्यक्षता में समस्त बुद्ध वचनों का संगायन किया। इस संगीति में आनन्द महास्थविर ने 'धर्म-सूत्रों' का पाठ किया, महास्थविर उपालि ने 'विनय' का संगायन किया। इस प्रकार प्रथम बौद्ध संगीति के अंतर्गत भगवान् बुद्ध के समस्त उपदेशों का संकलन किया गया, जो कि मगध के राजा अजात शत्रु के संरक्षण में हुआ। इस प्रकार समस्त बुद्ध वचनों का संकलन 'पालि तिपिटक'<sup>1</sup> के रूप में हमें आज प्राप्त होता है।

महासंघ द्वारा भगवान् बुद्ध की वाणी को अलग-अलग समय में अब तक की छह संगीतियों द्वारा सुरक्षित रखा है। अतः हम संघ को साधुवाद देते हैं।

1. पालि तिपिटक      विनय पिटक, सुत्त पिटक, अभिधम्म पिटक।

प्रस्तुत पुस्तक 'बौद्धचर्या-विधि' में भगवान् बुद्ध की कुछ महत्वपूर्ण प्रार्थना व दैनिक पूजा विधि के बारे में बताया गया है। इसका संकलन 'अशोक मिशन' नई दिल्ली स्थित एक प्रमुख बौद्ध संस्थान द्वारा किया जा रहा है।

'अशोक मिशन' की स्थापना कम्बोडिया के महान् भिक्षु धर्मवर महाथेर के द्वारा सन् 1948 में बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से हुई थी। सम्राट अशोक भगवान् बुद्ध की शिक्षा के प्रमुख समर्थक एवं प्रचारक थे। उन्होंने बुद्ध धम्म को अपने दैनिक जीवन में ही नहीं अपितु देश के सुशासन में भी जनहित के लिये अपनाया था। भगवान् बुद्ध द्वारा प्रतिपादित 'मध्यम-मार्ग' जो कि एकता; आपसी भाई चारा, अहिंसा, विश्व शान्ति का समर्थक है को ध्यान में रखकर 'अशोक मिशन' की स्थापना हुई। इन उद्देश्यों के अतिरिक्त शिक्षा, स्वास्थ्य, सामाजिक एवं आर्थिक विकास भी निहित है। हमें आशा है कि भगवान् बुद्ध की शिक्षा से प्रेरित हो बौद्धानुयायी इस पुस्तक से लाभ उठाएँगे।

भवतु सब्ब मंगलं

**लामा लोबज़ङ्ग**

अशोक मिशन, नई दिल्ली

नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स

अध्याय एक

वन्दना परिच्छेद

त्रिरत्न वन्दना

प्रत्येक बौद्ध का कर्तव्य है कि वह प्रातः एवं संध्या समय त्रिरत्न — वन्दना करे। त्रिरत्न कहते हैं बुद्ध, धर्म एवं संघ को। इनकी वन्दना करने से चित्त शान्त रहता है। मानसिक संतोष प्राप्त होता है और त्रिरत्न के गुणानुस्मरण से पुण्य लाभ होता है। त्रिरत्न-वन्दना का क्रम इस प्रकार है —

बुद्ध-वन्दना

नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स ।

(इसे तीन बार कहें। इसका अर्थ है — “उन भगवान् अर्हत् सम्यक् सम्बुद्ध को नमस्कार है।”)

इतिपि सो भगवा, अरहं, सम्मासम्बुद्धो, विज्जाचरणसम्पन्नो, सुगतो, लोकविदू,  
अनुत्तरो पुरिसदम्मसारथी, सत्था देवमनुस्सानं, बुद्धो भगवाति ।

वह भगवान् पूर्व-बुद्धों की तरह सबके पूज्य, सम्यक् सम्बुद्ध, सभी सद्-विद्याओं एवं सदाचरणों से युक्त, सुन्दर गति प्राप्त, लोक-लोकान्तर के रहस्य को जानने वाले, संसार के मनुष्यों को राग, द्वेष और मोह से छुड़ाने के लिए अनुपम सारथी के समान, देवता और मनुष्यों के उपदेशक (= शिक्षक) स्वयं बोधस्वरूप और दूसरों को बोध कराने वाले, सर्वश्रेष्ठ ऐश्वर्यों से युक्त और सभी क्लेशों से मुक्त हैं।

बुद्धं जीवितपरियन्तं सरणं गच्छामि ॥१॥  
ये च बुद्धा अतीता च, ये च बुद्धा अनागता ।

पच्चुप्पन्ना च ये बुद्धा, अहं वन्दामि सब्बदा ॥2॥  
 नत्थि मे सरणं अञ्जं, बुद्धो मे सरणं वरं ।  
 एतेन सच्चवज्जेन, होतु मे जयमङ्गलं ॥3॥  
 उत्तमङ्गेन वन्देहं, पादपंसु वरुत्तमं ।  
 बुद्धे यो खलितो देसो, बुद्धो खमतु तं ममं ॥4॥

मैं जीवन-पर्यन्त बुद्ध की शरण जाता हूँ ॥1॥

भूतकाल में जितने बुद्ध हुए हैं और भविष्यत् काल में जितने बुद्ध होंगे तथा वर्तमान् काल में जितने बुद्ध हैं — मैं उन सब की सदा वन्दना करता हूँ ॥2॥

मेरी दूसरी कोई शरण नहीं है, केवल बुद्ध ही मेरी शरण है, इस सत्य-वचन से मेरा जयमंगल (— कल्याण) हो ॥3॥

मैं उन भगवान् बुद्ध की उत्तम चरण-धूलि की सिर से वन्दना करता हूँ। यदि अज्ञानवश बुद्ध के प्रति मुझसे कोई दोष हो तो बुद्ध उसको क्षमा करें ॥4॥

धर्म-वन्दना

स्वाक्खतो भगवता धम्मो, सन्दिट्ठिको, अकालिको, एहिपस्सिको,  
 ओपनयिको पच्चत्तं वेदितब्बो विञ्जूहीति ।

भगवान् का धर्म सुन्दर रूप से कहा गया है, वह तत्काल फलदायक है, कालान्तर में नहीं, वह यहीं दिखाई देने वाला है, 'आओ और इसे देख लो' अनुभव करने योग्य है, निर्वाण तक पहुँचाने वाला और विद्वान् पुरुषों के स्वयं जानने योग्य है।

धम्मं जीवितपरियन्तं सरणं गच्छामि ॥1॥  
 ये च धम्मा अतीता च, ये च धम्मा अनागता ।  
 पच्चुप्पन्ना च ये धम्मा, अहं वन्दामि सब्बदा ॥2॥  
 नत्थि मे सरणं अञ्जं, धम्मो मे सरणं वरं ।  
 एतेन सच्चवज्जेन, होतु मे जयमङ्गलं ॥3॥  
 उत्तमङ्गेन वन्देहं, धम्मञ्च दुविधं वरं ।  
 धम्मो यो खलितो दोसो, धम्मो खमतु तं ममं ॥4॥



मैं जीवन पर्यन्त धर्म की शरण जाता हूँ ॥१॥

जो भूतकाल के बुद्धों द्वारा उपदिष्ट धर्म है और जो भविष्यत् काल के बुद्धों द्वारा उपदिष्ट जो धर्म है तथा वर्तमान् काल के बुद्ध द्वारा उपदिष्ट जो धर्म हैं — मैं उन सबकी सदा वन्दना करता हूँ ॥२॥

मेरी दूसरी कोई शरण नहीं है, केवल धर्म ही मेरी उत्तम शरण है, इस सत्य-वचन से मेरा जयमंगल (— कल्याण) हो ॥३॥

मैं व्यवहारिक और पारमार्थिक दोनों प्रकार के श्रेष्ठ धर्म की सिर से वन्दना करता हूँ, यदि अज्ञानवश धर्म के प्रति मुझसे कोई दोष हुआ हो तो धर्म उसको क्षमा करे ॥४॥

संघ-वन्दना

सुपटिपन्नो भगवतो सावकसङ्घो, उजुपटिपन्नो भगवतो सावकसङ्घो, आयपटिन्नो  
भगवतो सावकसङ्घो, सामीचिपटिपन्नो भगवतो सावकसङ्घो, यदिदं चत्तारि  
पुरिसयुगानि अट्ठपुरिसपुग्गला एस भगवतो सावकसङ्घो, आहुनेय्यो, पाहुनेय्यो,  
दक्खिनेय्यो, अञ्जलिकरणीयो, अनुत्तरं पुञ्जस्वेत्तं लोकस्सा<sup>१</sup>ति ।

भगवान् का श्रावक-संघ सुमार्ग पर चलने वाला है, भगवान् का श्रावक-संघ सही मार्ग पर चलने वाला है, भगवान् का श्रावक-संघ न्यायमार्ग पर चल रहा है, भगवान् का श्रावक-संघ उचित मार्ग पर चलने वाला है, जो कि यह चार युगल<sup>१</sup> और आठ पुरुष-पुद्गल हैं<sup>२</sup> — यही भगवान् का श्रावक-संघ है, वह आवाहन करने के योग्य है, आश्रित्य के योग्य है, दान देने के योग्य है, हाथ जोड़ प्रणाम के योग्य है और लोक के लिए सर्वोत्तम पुण्य-क्षेत्र है ।

सङ्घं जीवितपरियन्तं सरणं गच्छामि ॥१॥  
ये च सङ्घा अतीता च ये च सङ्घा अनागता ।

1. भगवान् बुद्ध का श्रावक-संघ चार युगों ( जोड़ों ) में विभक्त हैं (1) सोतापत्ति मार्ग और सोतापत्ति फल को प्राप्त, (2) सकुदागामी मार्ग और सकुदागामी फल को प्राप्त, (3) अनागामी मार्ग और अनागामी फल को प्राप्त, (4) अर्हत् मार्ग और अर्हत् फल को प्राप्त ।

2. भगवान् बुद्ध के श्रावक-संघ के आठ पुरुष ये हैं (1) सोतापत्ति-मार्ग-प्राप्ति, (2) सोतापत्ति-फल-प्राप्त, (3) सकुदागामी-मार्ग-प्राप्त, (4) सकुदागामी-फल-प्राप्त, (5) अनागामी-मार्ग-प्राप्त, (6) अनागामी-फल-प्राप्त, (7) अर्हत्-मार्ग-प्राप्त, (8) अर्हत्-फल-प्राप्त ।

पचुप्पन्ना च ये सङ्गा, अहं वन्दामि सब्बदा ॥2॥  
 नत्थि मे सरणं अञ्जं सङ्गा मे सरणं वरं ।  
 एतेन सच्चवज्जेन, होतु मे जयमङ्गलं ॥3॥  
 उत्तमङ्गेन वन्देहं सङ्खञ्च तिविधुत्तमं ।  
 सङ्खे यो खलितो दोसो, सङ्खो खमतु तं मम ॥4॥

मैं जीवन-पर्यन्त संघ की शरण जाता हूँ ॥1॥

जो भूतकाल के भिक्षु-संघ है और जो भविष्यत् काल में भिक्षु-संघ होंगे तथा जो वर्तमान काल में भिक्षु-संघ है — मैं उन सबकी सदा वन्दना करता हूँ ॥2॥

मेरी दूसरी कोई शरण नहीं है, केवल संघ ही मेरी उत्तम शरण है, इस सत्य-वचन से मेरा जयमंगल (— कल्याण) हो ॥3॥

जो पाप से रहित, मन, वाणी और काया — इन तीनों प्रकार से उत्तम और पवित्र संघ है, मैं उसकी सिर से वन्दना करता हूँ, यदि अज्ञानवश संघ के प्रति मुझसे कोई दोष हुआ हो तो संघ उसको क्षमा करे ॥4॥

चैत्य-वन्दना

वन्दामि चेतियं सब्बं, सब्बठानेसु पतिट्ठितं  
 शारीरिक-धातु महाबोधिं, बुद्धरूपं सकलं सदा ॥

सब स्थानों में प्रतिष्ठित शारीरिक-धातु (— अस्थि), बोधिवृक्ष और बुद्ध-प्रतिमा — इन सब चैत्यों की मैं सदा वन्दना करता हूँ।

बोधि-वन्दना

यस्स मूले निसिन्नोव, सब्बारि विजयं अका ।  
 पत्तो सब्बञ्जुतं सत्था, वन्दे तं बोधिपादपं ॥1॥  
 इमे ऐते महाबोधि, लोकनाथेन पूजितता ।  
 अहमि ते मनस्सामि, बोधिराजा नमत्थु ते ॥2॥

भगवान् बुद्ध ने जिस बोधिवृक्ष के नीचे बैठे हुए ही (राग, द्वेष, मोह और मार की सेना आदि) सब शत्रुओं पर विजय पाई तथा सर्वज्ञता-ज्ञान प्राप्त किया, उस बोधिवृक्ष को नमस्कार है ॥1॥

ये महाबोधिवृक्ष लोकनाथ भगवान् बुद्ध द्वारा पूजित हैं, मैं भी उन्हें नमस्कार करता हूँ — हे बोधिराजा ! तुम्हें मेरा नमस्कार है ॥2॥

## अध्याय दो

## पूजा परिच्छेद

## बुद्ध-पूजा

भगवान् के समय में गृहस्थ माला, पुष्प, धूप आदि तथागत को देकर उनका सम्मान करते थे, इसीलिए उनकी कुटी के पास सुगन्धियों का ढेर लग जाता था। सदा सुगन्धियों से सुवासित होने के कारण ही बुद्ध-कुटी को गन्ध-कुटी कहा जाता था। सम्प्रति भी बुद्धमूर्ति की पूजा पुष्प, धूप, दीप, आहार आदि से करते हैं। पूजा करने की गाथाएँ निम्नलिखित हैं।

## पुष्प-पूजा

वण्णगन्ध-गुणोपेतं एतं कुसुम-सन्ततिं ।  
पूजयामि मुनिन्दस्स, सिरीपाद-सरोरुहे ॥

मैं वर्ण, गन्ध और सुन्दर गुण से युक्त इस पुष्प से भगवान् बुद्ध के कमलवत् श्रीचरणों की पूजा करता हूँ।

## धूप-पूजा

गन्धसम्भार-युत्तेन धूपेनाहं सुगन्धिना ।  
पूजये पूजनेव्यन्तं, पूजाभाजन-मुत्तमं ॥

गन्ध से युक्त धूप की सुगन्धि से मैं उत्तम पूजा के योग्य पूजनीय बुद्ध की पूजा करता हूँ।

## सुगन्धि-पूजा

सुगन्धिकाय-वदनं, अनन्तगुण-गन्धिना ।  
सुगन्धिनाहं गन्धेन, पूजयामि तथागतं ॥

मैं सुगन्धि-युक्त शरीर एवं मुख वाले, अनन्त गुण-सुगन्धि से पूर्ण तथागत की सुगन्धि से पूजा करता हूँ।

प्रदीप-पूजा

घणसारप्यदित्तेन, दीपेन तमर्धसिना ।  
तिलोकदीपं सम्बुद्धं, पूजयामि तमोनुदं ॥

अन्धकार को नष्ट करने वाले प्रज्वलित प्रदीप से मैं तीनों लोकों के प्रदीप-तुल्य अज्ञान-अन्धकार को नष्ट करने वाले भगवान् बुद्ध की पूजा करता हूँ।

आहार-पूजा

अधिवासेतु नो भन्ते, भोजनं उपनामितं ।  
अनुकम्पं उपादाय, पटिगण्हातु-मुत्तमं ॥

भन्ते ! हमारे चढ़ाए हुए उत्तम भोजन को अनुकम्पा करते हुए ग्रहण करें।

संकल्प

इमाय धम्मानुधम्म-पटिपत्तिया बुद्धं पूजेमि ।  
इमाय धम्मानुधम्म-पटिपत्तिया धम्मं पूजेमि ।  
इमाय धम्मानुधम्म-पटिपत्तिया संघं पूजेमि ॥1॥  
अद्धा इमाय धम्मानुधम्म-पटिपत्तिया  
जातिजराव्याधिमरणम्हा परिमुञ्चिस्सामि ॥2॥  
इमिना पुञ्जकम्मेन, मा मे बालसमागमो ।  
सतं समागमो होतु, याव निब्बानपत्ति हेतु च ॥3॥  
देवो वस्सतु कालेन, सस्ससम्पत्ति हेतु च ।  
फीतो भवतु लोको च, राजा भवतु धम्मिको ॥4॥

इस धर्म की प्रतिपत्ति से मैं बुद्ध, धर्म, संघ की पूजा करता हूँ ॥1॥

निश्चय ही इस प्रतिपत्ति से जन्म, बुढ़ापा, बीमारी और मृत्यु से मुक्त हो जाऊँगा ॥2॥

इस पुण्य कर्म से निर्वाण प्राप्त करने के समय तक कभी भी अज्ञानियों से मेरी संगति न हो, सदा सत्पुरुषों की संगति हो ॥३॥

फसल की वृद्धि के लिए समय पर पानी बरसे, संसार के प्राणी उन्नति करें और शासक धार्मिक हो ॥४॥

## अध्याय तीन

### शील परिच्छेद

शील का शाब्दिक अर्थ सदाचार है। पञ्चशील, अष्टशील और प्रव्रज्यशील इसके अनेक भेद हैं। बौद्ध गृहस्थों का कर्तव्य है कि वे नित्य पञ्चशील का पालन करें और अष्टमी, अमावस्या एवं पूर्णिमा के दिन अष्टशील का पालन करें। प्रव्रज्या-शील भिक्षु-दीक्षा लेने वाले व्यक्तियों के लिए है।

पञ्चशील ग्रहण करने से पूर्व भगवान् को प्रणाम करके त्रिशरण ग्रहण करते हैं। जो व्यक्ति किसी अन्य धर्म को मानने वाला है और यदि वह बौद्ध धर्म ग्रहण करना चाहता है तो उसे किसी भिक्षु से त्रिशरण के साथ पञ्चशील ग्रहण करना चाहिए। त्रिशरण सहित पञ्चशील को ग्रहण करने की विधि इस प्रकार है —

#### धर्म याचना

दीक्षार्थी — ओकास, अहं भन्ते! तिसरणेन सह पञ्चसीलं धम्मं याचामि।  
अनुग्गहं कत्वा सीलं देथ मे भन्ते। दुतियमि अहं भन्ते। तिसरणेन सह पञ्चसीलं  
धम्मं याचामि। अनुग्गहं कत्वा सीलं देथ मे भन्ते। ततियमि अहं भन्ते! तिसरणेन  
सह पञ्चसीलं धम्मं याचामि। अनुग्गहं कत्वा सीलं देथ मे भन्ते।

आचार्य — यमहं वदामि तं वदेहि। (यदि शिष्य अधिक हों तो वदेहि के स्थान पर वदेथ कहना चाहिए।)

दीक्षार्थी — आम भन्ते !

दीक्षार्थी — अवसर दीजिए भन्ते ! मैं त्रिशरण सहित पंचशील धर्म ग्रहण करने हेतु प्रार्थना करता हूँ। भन्ते कृपा करके मुझे शील प्रदान कीजिए। द्वितीय बार भी और तृतीय बार भी भन्ते ! मैं त्रिशरण सहित पंचशील धर्म ग्रहण करने के लिए प्रार्थना करता हूँ। भन्ते कृपा करके मुझे शील प्रदान कीजिए।

आचार्य — मैं जो कहूँ उसे तुम (बहुत दीक्षार्थी होने पर तुम लोग) भी कहो।

दीक्षार्थी — अच्छा भन्ते।

नमस्कार

नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मसम्बुद्धस्स ।

(इसे तीन बार कहना चाहिए। इसका अर्थ है — उन भगवान् अर्हत् सम्यक् सम्बुद्ध को नमस्कार है।)

त्रिशरण

बुद्धं सरणं गच्छामि ।

धम्मं सरणं गच्छामि ।

सङ्गं सरणं गच्छामि ।

मैं बुद्ध की शरण जाता हूँ । मैं धर्म की शरण जाता हूँ । मैं संघ की शरण जाता हूँ ।

दुतियम्मि, बुद्धं सरणं गच्छामि ।

दुतियम्मि, धम्मं सरणं गच्छामि ।

दुतियम्मि, सङ्गं सरणं गच्छामि ।

दूसरी बार भी, मैं बुद्ध की शरण जाता हूँ । दूसरी बार भी, मैं धर्म की शरण जाता हूँ । दूसरी बार भी, मैं संघ की शरण जाता हूँ ।

ततियम्मि, बुद्धं सरणं गच्छामि ।

ततियम्मि, सङ्गं सरणं गच्छामि ।

ततियम्मि, धम्मं सरणं गच्छामि ।

तीसरी बार भी, मैं बुद्ध की शरण जाता हूँ । तीसरी बार भी, मैं धर्म की शरण जाता हूँ । तीसरी बार भी, मैं संघ की शरण जाता हूँ ।

पञ्चशील

1. पाणातिपाता वेरमणी सिक्खापदं समादियामि ।

2. अदिन्नादाना वेरमणी सिक्खापदं समादियामि ।

3. कामेसु भिच्छाचारा वेरमणी सिक्खापदं समादियामि ।



4. मुसावादा वेरमणी सिक्खापदं समादियामि ।
5. सुरा-मेरय-मज्ज-पमादड्डाना वेरमणी सिक्खापदं समादियामि ।

1. मैं प्राणि-हिंसा से विरत रहने की शिक्षा ग्रहण करता हूँ ।
2. मैं चोरी से विरत रहने की शिक्षा ग्रहण करता हूँ ।
3. मैं व्यभिचार से विरत रहने की शिक्षा ग्रहण करता हूँ ।
4. मैं झूठ बोलने से विरत रहने की शिक्षा ग्रहण करता हूँ ।
5. मैं सुरा (= पक्की शराब), मेरय (= कच्ची शराब), मद्य और नशीली चीजों के सेवन से विरत रहने की शिक्षा ग्रहण करता हूँ ।

### अष्टशील

अष्टशील को उपोसथ शील भी कहते हैं। हर महीने पूर्णिमा और अमावस्या के दिन अष्टशील का पालन किया जाता है।

अष्टशील ग्रहण करने वाले व्यक्ति को किसी भिक्षु के पास जाकर पहले तीन बार नमस्कार करना चाहिए। उसके बाद विधिवत् त्रिशरण ग्रहण करना चाहिए। तदुपरांत इस प्रकार अष्टशील लेना चाहिए —

1. पाणातिपाता वेरमणी सिक्खापदं समादियामि ।
2. अदिन्नादाना वेरमणी सिक्खापदं समादियामि ।
3. अब्रह्मचरिया वेरमणी सिक्खापदं समादियामि ।
4. मुसावादा वेरमणी सिक्खापदं समादियामि ।
5. सुरामेरयमज्ज-पमादड्डाना वेरमणी सिक्खापदं समादियामि ।
6. विकाल-भोजना वेरमणी सिक्खापदं समादियामि ।
7. नच्च-गीत-वादित-विसूक-दस्सन-माला-गंध-विलेपन-  
धारण-मण्डन-विभूसनड्डाना वेरमणी सिक्खापदं समादियामि ।
8. उच्चासयन-महासयना वेरमणी सिक्खापदं समादियामि ।

1. मैं प्राणि-हिंसा से विरत रहने की शिक्षा ग्रहण करता हूँ ।
2. मैं चोरी से विरत रहने की शिक्षा ग्रहण करता हूँ ।
3. मैं अब्रह्मचर्य से विरत रहने की शिक्षा ग्रहण करता हूँ ।
4. मैं झूठ बोलने से विरत रहने की शिक्षा ग्रहण करता हूँ ।

5. मैं सुरा, मेरय, मद्य और नशीली चीजों के सेवन से विरत रहने की शिक्षा ग्रहण करता हूँ।
6. मैं विकाल-भोजन<sup>1</sup> से विरत रहने की शिक्षा ग्रहण करता हूँ।
7. मैं नाच, गाना, बाजा और मेले-तमाशे को देखने तथा माला और सुगन्धि लेपनादि को धारण करने एवं शरीर-श्रृंगार के लिए किसी प्रकार के आभूषण की वस्तुओं को धारण करने से विरत रहने की शिक्षा ग्रहण करता हूँ।
8. मैं बहुत ऊँची और आलीशान शय्या पर सोने से विरत रहने की शिक्षा ग्रहण करता हूँ।

---

1. दिन में 12 बजे से लेकर दूसरे दिन अरुणोदय के पूर्व (5 बजे प्रातः) तक के समय को विकाल माना जाता है। उपोसथ-व्रतधारी गृहस्थ को विकाल में भोजन नहीं करना चाहिए।

## अध्याय चार

### परित्राण परिच्छेद

परित्राण का अर्थ है रक्षा। परिव्राण-पाठ से व्यक्ति का कल्याण होता है। भूत-प्रेतों का उपद्रव शान्त हो जाता है, विषम रोग दूर हो जाते हैं और सदा देवताओं की आरक्षा बनी रहती है। इसीलिए रोगी होने पर, गृहारम्भ आदि शुभ कर्मों में, विवाह-मंगल में, भोजन-दान देने के पश्चात् और अपने परिवार के कल्याण के लिए परिव्राण पाठ कराया जाता है। बौद्ध गृहस्थों एवं भिक्षुओं का यह दृढ़ विश्वास है कि परिव्राण-पाठ से सभी अमंगल नष्ट हो जाते हैं।

परित्राण-पाठ भिक्षु करते हैं, किन्तु जहाँ भिक्षु न हो वहाँ योग्य गृहस्थों द्वारा परिव्राण पाठ कराया जा सकता है। अपने कल्याण के लिए स्वयं पाठ करना भी लाभदायक होता है। हम यहाँ कतिपय प्रमुख परिव्राण-पाठ के सुत्तों को दे रहे हैं —

#### आवाहन

*समन्ता चक्कवालेसु, अत्रागच्छन्तु देवता ।  
सद्धम्मं मुनिराजस्स, सुणन्तु सग्गमोक्खदा ॥*

हे समस्त चकवालवासी देवगण! आप लोग यहाँ आएँ और मुनिराज भगवान् बुद्ध के स्वर्ग तथा मोक्षदायक सद्धर्म को श्रवण करें।

*धम्मसवणकालो अयं भदन्ता,  
धम्मसवणकालो अयं भदन्ता,  
धम्मसवणकालो अयं भदन्ता ।*

हे माननीय देवगण ! यह धर्म-श्रवण करने का समय है। (तीन बार कहें)

## महामङ्गल सुत्त

नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स ।

उन भगवान् अर्हतु सम्यक् सम्बुद्ध को नमस्कार है।

यं मङ्गलं द्वादसहि चिन्तयिंसु सदेवका ।  
 सोत्थानं नाधिगच्छन्ति अट्टतिसञ्च मङ्गलं ॥  
 देसितं देवदेवेन सब्बपापविनासनं ।  
 सब्बलोक-हितत्थाय मङ्गलं तं भणामहे ॥

जिन मंगल धर्मों के सम्बन्ध में बारह वर्षों तक (मनुष्य तथा) देवताओं सहित लोक में विचार किया गया, किंतु उनका ठीक से ज्ञान न हो सका, उन अड़तीस मंगलों का देवाधिदेव (भगवान् बुद्ध) ने सब पापों के विनाश के लिए उपदेश दिया। सर्व लोक-हित के लिए हम उन मंगल धर्मों को कह रहे हैं।

एवं मे सुतं । एकं समयं भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे ।  
 अथ खो अञ्जतरा देवता अभिवकन्ताय रत्तिया अभिवकन्तवण्णा केवलकप्पं जेतवनं  
 ओभासेत्वा येन भगवा तेनुपसङ्कमि, उपसङ्कमित्वा भगवन्तं अभिवादेत्वा एकमतं  
 अट्ठासि । एकमन्तं ठिता खो सा देवता भगवन्तं गाथाय अञ्जभासि —

बहु देवा मनसुस्सा च, मङ्गलानि अचिन्तयुं ।  
 आकङ्खमाना सोत्थानं, ब्रहि मङ्गलमुत्तमं ॥1॥  
 असेवना च बालानं, पण्डितानञ्च सेवना ।  
 पूजा च पूजनीयानं, एतं मङ्गलमुत्तमं ॥2॥  
 पतिरूपदेसवासो च, पुब्बे च कतपुञ्जता ।  
 अत्तसम्मापणिधि च, एतं मङ्गलमुत्तमं ॥3॥  
 बाहुसच्चञ्च सिप्पञ्च, विनयो च सुसिक्खतो ।  
 सुभासिता च या वाचा, एतं मङ्गलमुत्तमं ॥4॥  
 माता-पितु उपद्धानं, पुत्तदारस्स सङ्गहो ।  
 अनाकुला च कम्मन्ता, एतं मङ्गलमुत्तमं ॥5॥

दानञ्च धम्मचरिया च, जातकानञ्च सङ्गहो ।  
 अनवज्जानि कम्मनि, एतं मङ्गलमुत्तमं ॥6॥  
 आरति विरति पापा, मज्जपाना च सञ्जमो ।  
 अप्पमादो च धम्मेसु, एतं मङ्गलमुत्तमं ॥7॥  
 गारवो च निवातो च, सन्तुड्डी च कतञ्जुता ।  
 कालेन धम्मस्सवनं, एतं मङ्गलमुत्तमं ॥8॥  
 खन्ति च सोवचस्सता, समणानञ्च दस्सनं ।  
 कालेन धम्मसाकच्छा, एतं मङ्गलमुत्तमं ॥9॥  
 तपो च ब्रह्मचरियञ्च, अरियसञ्चानदस्सनं ।  
 निब्बानसच्छिकिरिया च, एतं मङ्गलमुत्तमं ॥10॥  
 फुट्टस्स लोकधम्मेहि, चित्तं यस्स न कम्पति ।  
 असोकं विरजं खेमं, एतं मङ्गलमुत्तमं ॥11॥  
 एतादिसानि कत्वान, सब्बत्थमपराजिता ।  
 सब्बत्थ सोत्थिं गच्छन्ति, तं तेसं मङ्गलमुत्तमंति॥12॥

ऐसा मैंने सुना। एक समय भगवान् श्रावस्ती में अनाथपिण्डिक के जेतवनाराम में विहार कर रहे थे। उस समय एक देवता रात्रि बीतने पर अपनी दीप्ति से समस्त जेतवन को आलोकित कर जहाँ भगवान् थे, वहाँ आया। आकर भगवान् का अभिवादन कर एक ओर खड़ा हो गया। एक ओर खड़े हो वह गाथा में भगवान् से बोला

कल्याण की आकांक्षा करते हुए बहुत देवताओं और मनुष्यों ने मंगल के विषय में विचार किया है। आप बतावें कि उत्तम मंगल क्या है ॥1॥

(भगवान् ने कहा) मूर्खों की संगति न करना, पंडितों (ज्ञानियों) की संगति करना और पूज्यों की पूजा करना — यह उत्तम मंगल है ॥2॥

अनुकूल स्थानों में निवास करना, पूर्व जन्म के संचित पुण्य का होना और अपने को सन्मार्ग पर लगाना — यह उत्तम मंगल है ॥3॥

अनेक विद्याओं को अर्जित करना, शिल्प कलाओं को सीखना, शिष्ट होना, सुशिक्षित होना और सुभाषण करना — यह उत्तम मंगल है ॥4॥

माता-पिता की सेवा करना, पुत्र-स्त्री (परिवार) का पालन-पोषण करना और गलत का काम न करना — यह उत्तम मंगल है ॥5॥

दान देना, धर्माचरण करना, बन्धु-बान्धवों का आदर-सत्कार करना और अनवर्जित कर्म करना — यह उत्तम मंगल है ॥6॥

मन, शरीर तथा वचन से पापों को त्यागना, मद्यपान न करना और धार्मिक कार्यों में तत्पर रहना — यह उत्तम मंगल है ॥7॥

पूजनीय व्यक्तियों का गौरव करना, नम्र होना, सन्तुष्ट रहना, कृतज्ञ रहना और उचित समय पर धर्म-श्रवण करना — यह उत्तम मंगल है ॥8॥

क्षमाशील होना, आज्ञाकारी होना, श्रमणों का दर्शन करना और उचित समय पर धार्मिक चर्चा करना — यह उत्तम मंगल है ॥9॥

तप, ब्रह्मचर्य का पालन, आर्यसत्त्वों का दर्शन और निर्वाण का साक्षात्कार — यह उत्तम मंगल है ॥10॥

जिसका चित्त लोकधर्म से विचलित नहीं होता, वह निःशोक, निर्मल तथा निर्भय रहता है — यह उत्तम मंगल है ॥11॥

इस प्रकार के कार्य करके सर्वत्र अपराजित हो (ये लोग) कल्याण को प्राप्त करते हैं — यह उनके लिए (= देवताओं तथा मनुष्यों के लिए) उत्तम मंगल है ॥12॥

## रतनसुत्त

कोटीसतसहस्सेसु, चक्कवालेसु देवता ।

यस्साणं पटिगण्हन्ति, यच्च वेसालिया पुरे ॥

रोगा-मनुस्स-दुब्भिक्खं, सम्भूतं तिविधं भयं ।

खिप्पमन्तरधापेसि, परित्तं तं भणामहे ॥

यानीध भूतानि समागतानि,

भुम्मनि वा यानि व अन्तलिक्खे ।

सब्बेव भूता सुमना भवन्तु,

अथोपि सक्कच्च सुणन्तु भासितं ॥1॥

तस्मा हि भूता निसामेथ सब्बे,

मेत्तं करोथ मानुसिया पजाय ।

दिवा च रत्तो च हरन्ति ये बलिं,

तस्मा हि ने रक्खथ अप्पमत्ता ॥2॥

यं किञ्चि वित्तं इध वा हुरं वा,

सग्गेसु वा यं रतनं पणीतं ।

न नो समं अत्थि तथागतेन,  
इदमिं बुद्धे रतनं पणीतं ।  
एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु ॥३॥

खयं विरागं अमतं पणीतं,  
यदज्झगा सक्कमुनी समाहितो ।  
न तेन धम्मेन समत्थि किञ्चि,  
इदमिं धम्मे रतनं पणीतं ।  
एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु ॥४॥

यं बुद्धसेट्ठो परिवण्णयी सुचिं,  
समाधिमानन्तरिकञ्जमाहु ।  
समाधिना तेन समो न विज्जति,  
इदमिं धम्मे रतनं पणीतं ।  
एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु ॥५॥

ये पुग्गला अट्ठ सतं पसत्था,  
चत्तारि एतानि युगानि होन्ति ।  
ते दक्खिण्येय्या सुगतस्स सावका,  
एतेसु विन्नानि महप्फलानि,  
इदमिं सङ्गे रतनं पणीतं,  
एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु ॥६॥

ये सुप्पयुत्ता मनसा दल्हेन,  
निक्कामिनो गोतमसासनम्हि ।  
ते पत्तिपत्ता अमतं विगय्हु,  
लद्धा मुधा निब्बुतिं भुञ्जमाना ।  
इदमिं सङ्गे रतनं पणीतं,  
एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु ॥७॥

यथिन्दखीलौ पठविं सितो सिया,  
 चतुब्भि वातेहि असम्पकम्पियो ।  
 तथूपमं सप्पुरिसं वदामि,  
 यो अरियसच्चानि अवेच्च पस्सति ।  
 इदम्पि सङ्गे रतनं पणीतं,  
 एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु ॥8॥

ये अरियसच्चानि विभावयन्ति,  
 गम्भीरपञ्जेन सुदेसितानि ।  
 किञ्चापि ते होन्ति भुसप्पमत्ता,  
 न ते भवं अड्डममादियन्ति ।  
 इदम्पि सङ्गे रतनं पणीतं,  
 एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु ॥9॥

सहावस्स दस्सन-सम्पदाय,  
 तयस्सु धम्मा जहिता भवन्ति ।  
 सक्कायदिट्ठि विचिकिच्छित्तं च,  
 सीलब्धतं वा पि यदत्थि किञ्चि ॥10॥

चतूहपायेहि च विप्पमुत्तो,  
 छच्चाभिठानानि अभब्बो कातुं ।  
 इदम्पि सङ्गे रतनं पणीतं,  
 एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु ॥11॥

किञ्चापि सो कम्मं करोति पापकं,  
 कायेन वाचा उद चेतसा वा ।  
 अभब्बो सो तस्स पटिच्छादाय,  
 अभब्बता दिट्ठपदस्स वुत्ता ।  
 इदम्पि सङ्गे रतनं पणीतं,  
 एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु ॥12॥



वनप्पगुम्बे यथा फुस्सितग्गे,  
 गिम्हानमासे पठमस्मि गिम्हे ।  
 तथूपमं धम्मवरं अदेसयि,  
 निब्बानगामिं परमं हिताय ।  
 इदम्पि बुद्धे रतनं पणीतं,  
 एतेन सच्चवेन सुवत्थि होतु ॥13॥

वरो वरञ्जू वरदो वराहरो,  
 अनुत्तरो धम्मवरं अदेसयि ।  
 इदम्पि बुद्धे रतनं पणीतं,  
 एतेन सच्चवेन सुवत्थि होतु ॥14॥

खीणं पुराणं नवं नत्थि सम्भवं,  
 विरत्तचित्तायतिके भवस्मि ।  
 ते खीणबीजा अवरुळिहछन्दा,  
 निब्बन्ति धीरा यथा'यं पदीपो ।  
 इदम्पि सङ्गे रतनं पणीतं,  
 एतेन सच्चवेन सुवत्थि होतु ॥15॥

यानीध भूतानि समागतानि,  
 भुम्मनि वा यानि'व अन्तलिक्खे ।  
 तथागतं देवमनुस्सपूजितं,  
 बुद्धं नमस्साम सुवत्थि होतु ॥16॥

यानीध भूतानि समागतानि,  
 भुम्मनि वा यानि'व अन्तलिक्खे ।  
 तथागतं देवमनुस्सपूजितं,  
 धम्मं नमस्साम सुवत्थि होतु ॥17॥

यानीध भूतानि समागतानि,  
 भुम्मानि वा यानि'व अन्तलिक्खे ।  
 तथागतं देवमनुस्सपूजितं,  
 सङ्गं नमस्साम सुवत्थि होतु ॥18॥

अर्थ (एक बार जब वैशाली नगरी भयंकर रोगों, अमानवी उपद्रवों और दुर्भिक्ष-पीड़ाओं से संतप्त हो उठी, तो इन तीनों प्रकार के दुःखों का शमन करने के लिए महास्थविर आनंद ने भगवान के अनंत गुणों का स्मरण किया।)

शत-सहस्र-कोटि चक्रवालों के वासी सभी देवगण जिसके प्रताप को स्वीकार करते हैं तथा जिसके प्रभाव से वैशाली नगरी रोग, अमानवी उपद्रव और दुर्भिक्ष से उत्पन्न त्रिविध भय से तत्काल मुक्त हो गयी थी, उस परित्राण को कह रहे हैं।

इस समय धरती या आकाश में रहने वाले जो भी प्राणी (भूतादि) उपस्थित हैं, वे सौमनस्य-पूर्ण हों (प्रसन्न-चित्त हों) और इस कथन (धर्म-वाणी) को आदर के साथ सुनें ॥1॥

(हे उपस्थित प्राणी) इस प्रकार (आप) सब ध्यान से सुनें और मनुष्यों के प्रति मैत्री-भाव रखें। जिन मनुष्यों से (आप) दिन-रात बलि (भेट-पूजा-प्रसाद) ग्रहण करते हैं, प्रमाद रहित होकर उनकी रक्षा करें ॥2॥

इस लोक में अथवा अन्य लोकों में जो भी धन-संपत्ति है और स्वर्गों में जो भी अमूल्य-रत्न हैं, उनमें से कोई भी तो तथागत (बुद्ध) के समान (श्रेष्ठ) नहीं है। (सचमुच) यह भी बुद्ध में उत्तम गुण-रत्न है। इस सत्य कथन के प्रभाव से कल्याण हो ॥3॥

समाहित-चित्त से शाक्य-मुनि भगवान बुद्ध ने जिस राग-विमुक्त आश्रव-हीन श्रेष्ठ अमृत को प्राप्त किया था, उस लोकोत्तर निर्वाण-धर्म के समान अन्य कुछ भी नहीं है। (सचमुच) यह भी धर्म में उत्तम रत्न है। इस सत्य कथन के प्रभाव से कल्याण हो ॥4॥

जिस परम विशुद्ध आर्य-मार्गिक समाधि की प्रशंसा स्वयं भगवान बुद्ध ने की है और जिसे “आनन्तरिक” याने तत्काल फलदायी कहा है, उसके समान अन्य कोई भी तो समाधि नहीं है। (सचमुच) यह भी धर्म में उत्तम रत्न है। इस सत्य के प्रभाव से कल्याण हो ॥5॥

जिन आठ प्रकार के आर्य (पुद्गल) व्यक्तियों की संतों ने प्रशंसा की है, (मार्ग और फल की गणना से) जिनके चार जोड़े होते हैं, वे ही बुद्ध के श्रावक-संघ (शिष्य) दक्षिणा के उपयुक्त पात्र हैं। उन्हें दिया गया दान महाफलदायी होता है। (सचमुच) यह भी संघ में उत्तम रत्न है। इस सत्य के प्रभाव से कल्याण हो ॥6॥

जो (आर्य पुद्गल) भगवान बुद्ध के (साधना) शासन में दृढ़ता-पूर्वक एकाग्रचित्त और वितृष्ण हो कर संलग्न हैं, तथा जिन्होंने सहज ही अमृत में गोता लगा कर अमूल्य

निर्वाण-रस का आस्वादन कर लिया है और प्राप्तव्य को प्राप्त कर लिया है (उत्तम अरहंत फल को पा लिया है) (सचमुच) यह भी संघ में उत्तम रत्न है। इस सत्य के प्रभाव से कल्याण हो ॥7॥

जिस प्रकार पृथ्वी में (दृढ़ता से) गड़ा हुआ इंद्र-कील (नगर-द्वार-स्तंभ) चारों ओर के पवन-वेग से भी प्रक्षिप्त नहीं होता, उस प्रकार के व्यक्ति को ही मैं सत्यपुरुष कहता हूँ, जिसने (भगवान के साधना-पथ पर चल कर) आर्यसत्त्यों का सम्यक् दर्शन (साक्षात्कार) कर उन्हें स्पष्टरूप से जान लिया है; (वह आर्य-पुद्गल भी प्रत्येक अवस्था में अविचलित रहता है)। (सचमुच) यह भी (आर्य) संघ में उत्तम रत्न है। इस सत्य के प्रभाव से कल्याण हो ॥8॥

जिन्होंने गंभीर-प्रज्ञावान भगवान बुद्ध के द्वारा उपदिष्ट आर्यसत्त्यों का भली प्रकार साक्षात्कार कर लिया है, वे (स्रोतापन्न) यदि किसी कारण से बहुत प्रमादी भी हो जायें (और साधना के अभ्यास में सतत तत्पर न भी रहें) तो भी वह आठवां जन्म ग्रहण नहीं करते। (अधिक से अधिक सातवें जन्म में उनकी मुक्ति निश्चित है।) (सचमुच) यह भी (आर्य) संघ में उत्तम रत्न है। इस सत्य के प्रभाव से कल्याण हो ॥9॥

दर्शन-प्राप्ति (स्रोतापन्न फल प्राप्ति) के साथ ही उसके (स्रोतापन्न व्यक्ति के) तीन बंधन छूट जाते हैं सत्कायदृष्टि (आत्म सम्मोह), विचिकित्सा (संशय), शीलव्रत परामर्श (विभिन्न व्रतों आदि कर्मकांडों से चित्तशुद्धि होने का विश्वास) अथवा अन्य जो कुछ भी ऐसे बंधन हों ... ॥10॥

वह चार अपाय गतियों (निरय लोकों) से पूरी तरह मुक्त हो जाता है। छह घोर पाप कर्मों (मातृ-हत्या, पितृ-हत्या, अर्हंत-हत्या, बुद्ध का रक्तपात, संघ-भेद एवं मिथ्या आचार्यों के प्रति श्रद्धा) को कभी नहीं करता। (सचमुच) यह भी (आर्य) संघ में उत्तम रत्न है। इस सत्य के प्रभाव से कल्याण हो ॥11॥

भले ही वह (स्रोतापन्न व्यक्ति) काय, वचन अथवा मन से कोई पाप कर्म कर भी ले तो उसे छिपा नहीं सकता। (भगवान ने कहा है) निर्वाण का साक्षात्कार कर लेने वाला अपने दुष्कृत कर्म को छिपाने में असमर्थ है। (सचमुच) सह भी (आर्य) संघ में उत्तम रत्न है। इस सत्य के प्रभाव से कल्याण हो ॥12॥

ग्रीष्म ऋतु के प्रारंभिक मास में जिस प्रकार सघन वन प्रफुल्लित वृक्षशिखरों से शोभायमान होता है, उसी प्रकार भगवान बुद्ध ने श्रेष्ठ धर्म का उपदेश दिया जो निर्वाण की ओर ले जाने वाला तथा परम हितकारी (यह लोकोत्तर धर्म शोभायमान) है। (सचमुच) यह भी बुद्ध में उत्तम रत्न है। इस सत्य के प्रभाव से कल्याण हो ॥13॥

श्रेष्ठ ने, श्रेष्ठ को जानने वाले, श्रेष्ठ को देने वाले तथा श्रेष्ठ को लाने वाले श्रेष्ठ (बुद्ध) ने अनुत्तर धर्म की देशना की। यह भी बुद्ध में उत्तम रत्न है। इस सत्य के प्रभाव से कल्याण हो ॥14॥

जिनके सारे पुराने कर्म क्षीण हो गये हैं और नये कर्मों की उत्पत्ति नहीं होती; पुनर्जन्म में जिनकी आसक्ति समाप्त हो गयी है, वे क्षीण-बीज (अरहंत) तृष्णा-विमुक्त हो गये हैं। वे इसी प्रकार निर्वाण को प्राप्त होते हैं जैसे (कि तेल समाप्त होने पर) यह प्रदीप। (सचमुच) यह भी (आर्य) संघ में श्रेष्ठ रत्न है। इस सत्य के प्रभाव से कल्याण हो ॥15॥

इस समय धरती या आकाश में रहने वाले जो भी प्राणी यहाँ उपस्थित हैं, तथागत सभी देवों और मनुष्यों द्वारा पूजित है। बुद्ध को नमस्कार करते हैं, कल्याण हो ॥16॥

इस समय धरती या आकाश में रहने वाले जो भी प्राणी यहाँ उपस्थित हैं, तथागत सभी देवों और मनुष्यों द्वारा पूजित है और धर्म को नमस्कार करते हैं, कल्याण हो ॥17॥

इस समय धरती या आकाश में रहने वाले जो भी प्राणी यहाँ उपस्थित हैं, हम सभी तथागत देवों और मनुष्यों द्वारा पूजित हैं और संघ को नमस्कार करते हैं, कल्याण हो ॥18॥

## करणीयमेत्त सुत्त

यस्सानुभावतो यक्खा, नेव दस्सेन्ति भीसनं ।  
यञ्चि चेवानुयुञ्जन्तो, रत्तिन्दिवमतन्दितो ॥

सुखं सुपति सुत्तो च, पापं किञ्चि न परसति ।  
एवमादि गुणूपेतं, परितं तं भणामहे ॥

जिसके प्रभाव से यक्ष अपना भीषण भय-रूप नहीं दिखा सकते और जिसके दिन-रात के बिना थके अभ्यास करने से सोया हुआ सुख की नींद सोता है, तथा सोया हुआ व्यक्ति कोई दुःस्वप्न (पाप) नहीं देखता है इत्यादि, इस प्रकार के गुणों से युक्त उस परिव्राण को कह रहे हैं

करणीयमत्थकुसलेन, यंतं सन्तं पदं अभिसमेच्च ।  
सक्को उजू च सूहजू च, सुवचो वस्स मुदु अनतिमानी ॥1॥  
सन्तुस्सको च सुभरो च, अप्पकिच्चो च सल्लहुकवुत्ति ।  
सन्तिन्द्रियो च निपको च, अप्पगब्भो कुलेसु अननुगिद्धो ॥2॥  
न च खुदं समाचरे किञ्चि, येन विञ्जू परे उपवदेय्युं ।  
सुखिनो वा खेमिनो होन्तु, सब्बे सत्ता भवन्तु सुखितत्ता ॥3॥

ये केचि पाणभूतस्थि, तसा वा थावरा वा अनवसेसा ।  
 दीघा वा ये महन्ता वा, मज्झिमा रस्सका अणुकथूला ॥4॥  
 विट्ठ वा ये व अदिट्ठा, ये च दूरे वसन्ति अविदूरे ।  
 भूता व सम्भवेसी वा, सब्बे सत्ता भवन्तु सुखितत्ता ॥5॥  
 न परो परं निकुब्बेथ, नातिमज्जेथ कत्थचि नं कच्चि ।  
 ब्यारोसना पटिघसज्जा, नाज्जमज्जस्स दुक्खमिच्छेय्य ॥6॥  
 माता यथा नियं पुत्तं, आयुसा एकपुत्तमअनुरक्खे ।  
 एवमि सब्भूतेसु, मानसं भावये अपरिमाणं ॥7॥  
 मेत्तज्ज सब्ब-लोकस्मिं, मानसं भावये अपरिमाणं ।  
 उद्धं अधो च तिरियज्ज, असम्बाधं अवेरमसपत्तं ॥8॥  
 तिट्ठं चरं निसिन्नो वा, सयानो वा यावतस्स विगतमिच्छो ।  
 एतं सतिं अधिठेय्य, ब्रह्ममेतं विहारं इधमाहु ॥9॥  
 विट्ठिज्ज अनुपग्गम्म, सीलवा दस्सनेन सम्पन्नो ।  
 कामेसु विनेय्य गेधं, न हि जातु गम्भसेय्यं पुनरेतीति ॥10॥

शान्ति पद निर्वाण की प्राप्ति चाहने वाले, कल्याण-साधन में निपुण मनुष्य को चाहिए कि वह योग्य, ऋजु और अत्यन्त सरल बने। उसकी बात सुन्दर, मृदु और विनीत हो ॥1॥

वह सन्तोषी हो, सहज ही पोष्य हो और सादा जीवन बिताने वाला हो। उसकी इन्द्रियाँ शान्त हों। वह चतुर हो, अप्रगल्भ हो और कुलों में अनासक्त हो ॥2॥

ऐसा कोई छोटा से भी छोटा कार्य न करे जिसके लिए दूसरे विज्ञ लोग उसे दोष दें। (और इस प्रकार मैत्री करे) सब प्राणी सुखी हों, क्षेमी हों और सुखितात्मा हों ॥3॥

जंगम या स्थावर, दीर्घ या महान्, मध्यम या ह्रस्व, अणु या स्थूल, दृष्ट या अदृष्ट, दूरस्थ या निकटस्थ, उत्पन्न या उत्पन्न होने वाले जितने भी प्राणी हैं, वे सभी सुखपूर्वक रहें ॥4-5॥

एक दूसरे की वंचना न करे। कभी किसी का अनादर न करें। वैमनस्थ या क्रोध से एक दूसरे के दुःख की इच्छा न करे ॥6॥

माता जिस प्रकार जान की परवाह न कर अपने इकलौते पुत्र की रक्षा करती है, उसी प्रकार प्राणिमात्र के प्रति अपने मन में असीम प्रेम-भाव बढ़ावे ॥7॥

बिना बाधा, वैर और शत्रुता के ऊपर, नीचे और तिरछे सारे संसार के प्रति असीम प्रेम बढ़ावे ॥8॥

खड़े रहते, बैठते या सोते, जब तक जागृत रहे, तब तक इस प्रकार की मैत्री भावना की स्मृति बनाये रखें। इसी को ब्रह्मविहार कहते हैं ॥9॥

ऐसा नर किसी मिथ्या दृष्टि में न पड़, शीलवान् हो, विशुद्ध दर्शन से युक्त हो, काम-तृष्णा का नाश कर पुनर्जन्म से मुक्त हो जाता है ॥10॥

## पुण्यानुमोदन

दुःखप्पत्ता च निददुःखा, भयप्पत्ता च निब्भया ।  
 शोकप्पत्ता च निस्सोका, होन्तु सब्बेपि पाणिनो ॥1॥  
 एत्तावना च अम्होहि, सम्भतं पुञ्जसम्पदं ।  
 सब्बे देवानुमोदन्तु, सब्बसम्पत्ति सिद्धिया ॥2॥  
 दानं ददन्तु सद्धाय, सीलं रक्खन्तु सब्बदा ।  
 भावनाभिरता होन्तु, गच्छन्तु देवतागता ॥3॥  
 सब्बे बुद्धा बलपत्ता, पच्चेकानञ्च यं बलं ।  
 अरहन्तानञ्च तेजेन, रक्खं बन्धामि सब्बसो ॥4॥  
 आकासद्वा च भुम्मद्वा, देवानागा महिद्धिका ।  
 पुञ्जं तं अनुमोदित्वा, चिरं रक्खन्तु सासनं ॥5॥  
 आकासद्वा च भुम्मद्वा, देवानागा महिद्धिका ।  
 पुञ्जं तं अनुमोदित्वा, चिरं रक्खन्तु देसनं ॥6॥  
 आकासद्वा च भुमद्वा, देवानागा महिद्धिका ।  
 पुञ्जं तं अनुमोदित्वा, चिरं रक्खन्तु त्व परन्ति ॥7॥

सभी दुःख प्राप्त प्राणी दुःख-रहित, भय-प्राप्त भय-रहित और शोक-प्राप्त शोक-रहित हों ॥1॥

यह जो हम लोगों द्वारा सब सम्पत्तियों को प्राप्त करने वाला पुण्यार्जन किया गया है, सब देवता उसका अनुमोदन करें ॥२॥

श्रद्धा से दान दें, सदा शील का पालन करें, भावना में लगे और स्वर्ग-गति को प्राप्त हों ॥३॥

मैं सभी बलप्राप्त बुद्धों, प्रत्येकबुद्धों तथा अर्हन्तों के प्रताप से सब प्रकार से आरक्षा बाँध रहा हूँ ॥४॥

आकाश और भूमि पर रहने वाले महाप्रतापी देवता और नाग इस पुण्य का अनुमोदन करके चिरकाल तक शासन (बुद्धधर्म) की रक्षा करें ॥५॥

आकाश और भूमि पर रहने वाले महाप्रतापी देवता और नाग इस पुण्य का अनुमोदन करके चिरकाल तक देशना (धर्मोपदेश) की रक्षा करें ॥६॥

आकाश और भूमि पर रहने वाले महाप्रतापी देवता और नाग इस पुण्य का अनुमोदन करके चिरकाल तक तेरी रक्षा करें ॥७॥

भवतु सब्ब मङ्गलं, रक्खन्तु संव्व देवता ।  
 सब्ब बुद्धानुभावेन, सदा सोत्थि भवन्तु ते ॥  
 भवतु सब्ब मङ्गलं, रक्खन्तु सब्ब देवता ।  
 सब्ब धम्मानुभावेन, सदा सोत्थि भवन्तु ते ॥  
 भवतु सब्ब मङ्गलं, रक्खन्तु सब्ब देवता ।  
 सब्ब सङ्गानुभावेन, सदा सोत्थि भवन्तु ते ॥

साधु, साधु, साधु ॥

सभी प्राणियों का मंगल हो, सभी देवतागण रक्षा करें ।

भगवान् बुद्ध की महिमा से, सदा स्वस्ति हो ॥

सभी प्राणियों का मंगल हो, सभी देवतागण रक्षा करें ।

बुद्ध द्वारा प्रतिपादित धर्म की महिमा से, सदा स्वस्ति हो ।

सभी प्राणियों का मंगल हो, सभी देवतागण रक्षा करें ।

सारे आर्यसंघ की महिमा से, सदा स्वस्ति हो ॥

साधु, साधु, साधु ॥

## अध्याय पाँच

## शिक्षा परिच्छेद

वैशाख पूर्णिमा के दिन सम्यक् सम्बोधि प्राप्त करने के पश्चात् शाक्यमुनी बुद्ध ने आषाढ़ी पूर्णिमा के दिन ऋषिपतन मृगदाय, सारनाथ (वाराणसी) में 'धर्मचक्र प्रवर्तन सूत्र' का पञ्चवर्गीय भिक्षुओं को सर्वप्रथम उपदेश दिया। इस उपदेश में भगवान् बुद्ध ने अपनी मूलभूत शिक्षा का प्रतिपादन किया, जोकि, मध्यम मार्ग से जानी जाती है। ये निम्न हैं :

## चार आर्यसत्य अष्टाङ्गिक मार्ग

1. इधं खो पन, भिक्खवे, दुक्खं अरियसच्चं :  
जातिपि दुक्खा, जरापि दुक्खा, व्याधिपि दुक्खो,  
मरणमपि दुक्खं, अप्पयेहि सम्ययोगो दुक्खो,  
पियेहि विप्पयोगो दुक्खो, यमिच्छि न लभति  
तमपि दुक्खं; संखित्तेन पञ्चुपादानखन्धा दुक्खा।
2. इदं खो पन, भिक्खवे, दुक्खं समुदयं अरियसच्चं :  
यायं तण्हा पोन्नोब्भाविका नन्दिरागसहगता  
तत्रतत्राभिनन्दिनी, सेय्यधिदं कामतण्हा,  
भवतण्हा, विभवतण्हा।
3. इदं खो पन, भिक्खवे, दुक्खनिरोधं अरियसच्चं :  
यो तस्सायेव तण्हाय असेसविरागनिरोधो  
चागो पटिनिस्सग्गो मुत्ति अनालयो।
4. इदं खो पन, भिक्खवे दुक्खनिरोधगामिनी  
पटिपदा अरियसच्चं : अयमेव अरियो अट्ठङ्गिको  
मग्गो, सेय्यधिदं : सम्मा दिट्ठि, सम्मा सङ्कप्पो,  
सम्मा वाचा, सम्मा कम्मन्तो, सम्मा आजीवो,  
सम्मा वायामो, सम्मा सति, सम्मा समाधि



1. भिक्षुओं ! दुःख आर्यसत्य है, (ये निम्न हैं) : जन्म दुःख है, बुढ़ापा दुःख है, बीमारी दुःख है, मृत्यु दुःख है, अप्रिय से मिलना दुःख है, प्रिय से वियोग दुःख है, इच्छित वस्तु का न मिलना दुःख है। संक्षेप में पाँच स्कन्धों के प्रति आसक्ति ही दुःख है।
2. भिक्षुओं ! दुःख समुदय (कारण) आर्य सत्य है : यह जो तृष्णा है, वह ही पुनः बनाने वाली, वह आनन्द और लोभ के साथ कभी एक वस्तु के प्रति तृष्णा पैदा करती है तो कभी दूसरी वस्तु के प्रति। ये हैं कामतृष्णा, भवतृष्णा, विभवतृष्णा।
3. भिक्षुओं ! दुःख का निरोध आर्यसत्य है : ये जो तृष्णा है इसका समूल निरुद्ध हो जाना, इसके प्रति आसक्ति समाप्त कर पूर्ण रूप से मुक्ति प्राप्त करना तीसरा आर्यसत्य है।
4. भिक्षुओं ! दुःख मुक्ति का मार्ग यह आर्यसत्य है। ये है आर्य अष्टाङ्गिक मार्ग सम्यक् दृष्टि, सम्यक् संकल्प, सम्यक् वाक्, सम्यक् कर्मन्त, सम्यक् आजीविका, सम्यक् व्यायाम, सम्यक् स्मृति और सम्यक् समाधि।

बुद्ध ने अपनी सभी शिक्षाओं में दुःखों के कारण का मूल तृष्णा को बतलाया है। तृष्णा के कारण संसार की विभिन्न वस्तुओं की ओर मनुष्य प्रवृत्त होता है; और जब वह उन्हें प्राप्त नहीं कर सकता अथवा जब वे प्राप्त होकर भी नष्ट हो जाती हैं, तब उसे दुःख होता है। तृष्णा के साथ मृत्यु प्राप्त करने वाला प्राणी उसकी प्रेरणा से फिर पुनः पुनः जन्म ग्रहण करता है और संसार के दुःखचक्र में पिसता रहता है। अतः बुद्ध ने तृष्णा का सर्वथा प्रहाण करने हेतु एक मार्ग प्रशस्त किया जिसे 'आर्य अष्टांगिक' मार्ग कहते हैं, जो कि मुक्ति का मार्ग है। इसी कारण इस मार्ग को आर्य अष्टांगिक मार्ग या दुःख-निरोध-गामिनी प्रतिपदा मार्ग भी कहते हैं। यह बुद्ध की प्रमुख शिक्षाओं में से एक है जो दुःखों से मुक्ति पाने एवं परिशुद्ध-ज्ञान के साधन के रूप में बताया गया है। आर्य अष्टांगिक मार्ग मूलतः तीन शब्दों से बना है 'आर्य', 'अष्टांगिक' तथा 'मार्ग' जिसमें 'आर्य' का अर्थ महान् होता है तथा 'आर्य' 'बुद्ध' के लिए भी प्रयुक्त होता है। 'अष्टांगिक' का अर्थ आठ अंगों वाला तथा 'मार्ग' का अर्थ रास्ता होता है। दुःखों को समाप्त करने हेतु बुद्ध के महान मार्ग संख्या में आठ थे अतः इनको आर्य अष्टांगिक मार्ग के नाम से जाना जाता है। इस अष्टांग मार्ग के सभी 'मार्ग', 'सम्यक्' शब्द से आरम्भ होते हैं। सम्यक् का साधारणतया अर्थ अच्छा या सही होता है। बुद्ध ने इस मार्ग के आठ अंग बताए हैं जो कि निम्नलिखित हैं

1. सम्यक् दृष्टि : आर्य श्रावक कि वह दृष्टि सम्यक् दृष्टि कहलाती है जिसके माध्यम से वह समस्त दुराचारों एवं सदाचारों को चाहे वह शारीरिक हो, वाचसिक हो या मानसिक हो को ठीक-ठीक पहचानता है तथा साथ ही साथ इसके मूल को भी पहचानता है। इसे प्रज्ञा भी कह सकते हैं।

2. **सम्यक् संकल्प** : जब व्यक्ति अपने नैतिक, मानसिक एवं अध्यात्मिक विकास हेतु संकल्प लेता है तो उस अवस्था को सम्यक् संकल्प कहते हैं। ये संकल्प तीन हैं नैष्कर्म्य संकल्प, अव्यापाद संकल्प एवं अविहिंसा संकल्प हैं।
3. **सम्यक् वचन** : व्यक्ति द्वारा ऐसे वचनों का प्रयोग करना जो खुद के साथ-साथ दूसरों को भी हानि प्रदान न करे उसे सम्यक् वचन कहते हैं। बुद्ध के अनुसार झूठ बोलना (मुसावादे), चुगली (पिसुणवादे), कठोर वचन (फरुसावाचा), फिजूल की बातें (सम्फप्पलापा) करना मिच्छावचन है तथा इनसे विरत रहना ही सम्यक् वचन है।
4. **सम्यक् कर्म** : मनुष्य एक कर्मशील प्राणी है, अतः इस संसार में आने के बाद कर्म करना ही होता है इस कारण बुद्ध ने इन कर्मों को भी सही प्रकार से करने हेतु कुछ मार्गों को बतलाया है इसके अनुसार व्यक्ति को जीव हिंसा, चोरी, काम मिथ्याचार से दूर रहना चाहिए।
5. **सम्यक् आजीविका** : बुद्ध ने आर्य श्रावक को मिथ्या आजीविका को त्याग कर के सम्यक् प्रयास से अपनी आजीविका चलाने हेतु शस्त्र व्यापार, जानवरों का व्यापार, मांस का व्यापार, मदिरा का व्यापार तथा विष के व्यापार से विरत रहने का मार्ग बतलाया। इस प्रकार की जीविका को ही सम्यक् आजीविका कहते हैं।
6. **सम्यक् व्यायाम** : बुद्ध ने व्यक्ति के सभी प्रकार के कायिक, वाचसिक एवं मानसिक क्रिया-कलापों की शुद्धता हेतु एक व्यायाम बतलाया जिससे मन शुद्ध होता है, जिसके फलस्वरूप समस्त कुशल कायिक, वाचसिक एवं मानसिक क्रियाओं का मार्ग प्रशस्त होता है। ये प्रयास/व्यायाम निम्न हैं 1. **संवरप्पधान** अर्थात् जो अकुसल, पापमय मन में विषय अनुत्पन्न हैं उत्पन्न न हों इसके हेतु प्रयास; 2. **पहानप्पधान** अर्थात् जो अकुसल, पापमय मन में विषय हैं उसके समाप्ति हेतु प्रयास; 3. **भावनप्पधान** अर्थात् जो कुसल, पुण्यकारी विषय मन में अनुत्पन्न हैं उत्पन्न हों इसके हेतु प्रयास; 4. **अनुरक्खणप्पधान** अर्थात् जो कुशल, पुण्यकारी विषय मन में उत्पन्न हो गयी हैं वे नष्ट न हों उत्तरोत्तर बढ़ें इसके हेतु प्रयास।
7. **सम्यक् स्मृति** : बुद्ध ने आर्य श्रावक कि विशुद्धि के लिए प्रतिक्षण अपने अन्दर तथा अपने आस-पास बाहर घटित घटनाओं के प्रति प्रतिक्षण जागरूक रहने का परामर्श दिया तथा व्यक्ति को अपने काय के प्रति जागरूक (कायानुपस्सना), समस्त वेदनाओं के प्रति जागरूक (वेदानुपस्सना), चित्त के प्रति जागरूक (चित्तानुपस्सना) तथा विभिन्न प्रकार के धर्मों के प्रति जागरूक रहते (धम्मनुपस्सना) हुए जीवन यापन का उपदेश दिया।
8. **सम्यक् समाधि** : कुसल चित्त की एकाग्रता समाधि कहलाती है। उपर्युक्त वर्णित मार्ग के उपरांत व्यक्ति का हृदय अत्यंत परिशुद्ध हो उठता है और इन्हीं धर्मों का

सेवन करने, भावना करने, संपोषित करने, बढ़ाने तथा एकाग्र करने का नाम समाधि भावना है।

## प्रतीत्य समुत्पाद

### अनुलोम

अविज्जापच्चया सङ्खारा, सङ्खारपच्चया विज्जाणं,  
विज्जाणपच्चया नामरूपं, नामरूपपच्चया सळायतनं,  
सळायतनपच्चया फस्सो, फस्सपच्चया वेदना,  
वेदनापच्चया तण्हा, तण्हापच्चया उपादानं,  
उपादानपच्चया भवो, भवपच्चया जाति,  
जातिपच्चया जरा-मरणं सोकपरिदेवदुक्खदोमनस्सुपायासासम्भवन्ति ।  
एवमेतस्स केवलस्स दुक्खक्खन्धस्स समुदयो होति ।

अविद्या के प्रत्यय (कारण) से संस्कार, संस्कार के प्रत्यय से विज्ञान, विज्ञान के प्रत्यय से नामरूप, नामरूप के प्रत्यय से छह आयतन, छह आयतन के प्रत्यय से स्पर्श, स्पर्श के प्रत्यय से वेदना, वेदना के प्रत्यय से तृष्णा (राग-द्वेष), तृष्णा के प्रत्यय से उपादान (आसक्ति), उपादान के प्रत्यय से भव, भव के प्रत्यय से जाति (जन्म), जाति के प्रत्यय से बूढ़ापा होना, मरना, शोक करना, रोना, पीटना, दुःखित, बैचैन और परेशान होना होता है। इस प्रकार सारा का सारा दुःख स्कन्ध ही उठ खड़ा होता है।

### पटिलोम

अविज्जायत्वेव असेस विरागनिरोधा, सङ्खारनिरोधो  
सङ्खारनिरोधा, विज्जाणनिरोधो, विज्जाणनिरोधा, नामरूपनिरोधो,  
नामरूपनिरोधा, सळायतननिरोधो, सळायतननिरोधा, फस्सनिरोधो,  
फस्सनिरोधा, वेदनानिरोधो, वेदनानिरोधा, तण्हानिरोधो,  
तण्हनिरोधा, उपादाननिरोधो, उपादाननिरोधा, भवनिरोधो,  
भवनिरोधा, जातिनिरोधो, जातिनिरोधा, जरामरणं,  
सोकपरिदेवदुक्खदोमनस्सुपायासा निरुज्झन्ति ।  
एवमेतस्स केवलस्स दुक्खक्खन्धस्स निरोधो होति ।

अविद्या के सम्पूर्णतः निरुद्ध हो जाने से संस्कार समाप्त हो जाता है। संस्कार के निरुद्ध होने से विज्ञान समाप्त हो जाता है। विज्ञान के निरुद्ध हो जाने से नाम-रूप समाप्त हो जाता है। नाम-रूप के निरुद्ध हो जाने से छह आयतन समाप्त हो जाते हैं। छह आयतन के निरुद्ध हो जाने से स्पर्श समाप्त हो जाता है। स्पर्श के निरुद्ध हो जाने से वेदना समाप्त हो जाती है। वेदना के निरुद्ध हो जाने से तृष्णा समाप्त हो जाती है। तृष्णा के निरुद्ध हो जाने से उपादान समाप्त हो जाता है। उपादान के निरुद्ध हो जाने से भव समाप्त हो जाता है। भव के निरुद्ध हो जाने से जन्म समाप्त हो जाता है। जन्म के निरुद्ध होने से बूढ़ा होना, मरना, शोक करना, रोना, पीटना, दुःखित, बेचैन और परेशान होना समाप्त हो जाता है। इस प्रकार सारा का सारा दुःख स्कन्ध ही समाप्त हो जाता है।

## बुद्ध वचन

*अनेक जातिसंसार, सन्धाविस्सं अनिब्बितं ।  
गहकारकं गवेसन्तो, दुक्खा जाति पुनप्पुनं ॥*

अनेक जन्मों तक बिना रुके संसार में, दौड़ता रहा। इस कायारूपी घर बनाने वाले की खोज करते हुए पुनः पुनः दुःखमय जन्म में पड़ता रहा।

*गहकारक! दिट्ठोसि, पुन गेहं न काहसि ।  
सब्बाते फासुका भग्गा, गहकूटं विसङ्घितं ।  
विसङ्घारगतं चित्तं, तण्हानं खयमज्झगा ॥*

हे गृहकारक! अब तुझे देख लिया है। अब तू पुनः घर नहीं बना सकेगा। तेरी सारी कड़ियाँ भग्न हो गयी हैं। घर का शिखर भी विशृंखलित हो गया है। संस्कार रहित चित्त में तृष्णा का सामूल नाश हो गया है।

*सब्बपापस्स अकरणं, कुसलस्स उपसम्मदा ।  
सचित्त परियोदपनं, एवं बुद्धानसासनं ॥*

सभी प्रकार के पापों को न करना; कुशल (पुण्य) कार्यों का संपादन करना, अपने चित्त को परिशुद्ध करना; यह समस्त बुद्धों की शिक्षा है।

*तुम्हे किच्चं आतप्पं, अक्खातारो तथागता ।  
पटिपन्ना पमोखन्ति ज्ञायिनो मारबन्धना ॥*

सभी तथागत बुद्ध केवल मार्ग आख्यात कर देते हैं; विधि सिखा देते हैं, अभ्यास और प्रयत्न तो तुम्हें ही करना है। जो स्वयं मार्ग पर आरुढ़ होता है; ध्यान में रत होते हैं, वे मार यानी मृत्यु के बन्धन से मुक्त हो जाते हैं।

अत्ताहि अत्तनो नाथो, अत्ता हि अत्तनो गति ।  
तस्मा सञ्जमय्यत्तानं, अस्सं भद्रं व वाणिजो ॥

तुम आप ही अपने स्वामी हो, आप ही अपनी गति हो! अपनी अच्छी या बुरी गति के तुम आप ही तो जिम्मेदार हो। इसलिए अपने आप को वश में रखो; वैसे ही, जैसे कि घोड़ों का कुशल व्यापारी श्रेष्ठ घोड़ों को पालतू बना कर वश में रखता है। संयत रखता है।

मनोपुब्बङ्गमा धम्मा, मनोसेट्ठा मनोमया ।  
मनसा चे पदुट्ठेन, भासति वा करोति वा ।  
ततो नं दुक्खमन्वेति, चक्क'व वहतो पदं ॥  
मनसा चे पसन्नेन, भासति वा करोति वा ।  
ततो नं सुखमन्वेति छायाव अनपायिनी ॥

सभी धर्म (अवस्थाएँ) पहले मन में उत्पन्न होते हैं। मन ही मुख्य है, ये धर्म मनोमय हैं। जब आदमी मलिन मन से बोलता या कार्य करता है तो दुःख उसके पीछे ऐसे ही हो लेता है जैसे गाड़ी के पहिये बैल के पैरों के पीछे-पीछे। जब आदमी स्वच्छ मन से बोलता है या कार्य करता है तो सुख उसके पीछे ऐसे ही हो लेता है जैसे कभी साथ न छोड़ने वाली छाया।

फुट्ठस्स लोकधम्मोहि, चित्तं यस्स न कम्पति ।  
असोकं विरजं खेमं, एतं मङ्गलमुत्तमं ॥

लोक धर्मों के स्पर्श से चित्त विचलित नहीं होने देना; निःशोक, निर्मल और निर्भय रहना ये श्रेष्ठ मंगल हैं।

चक्खुना संवरो साधु, साधु सोतेन संवरो ।  
घाणेन संवरो साधु, साधु जिह्वाय संवरो ।  
कायेन संवरो साधु, साधु वाचाय संवरो ।  
मनसा संवरो साधु, साधु सब्बत्थ संवरो ।  
सब्बत्थ संवृतो भिक्खु, सब्बदुक्खा पमुच्चति ॥

आँख संवर (संयम) भला है। भला है कान का संवर! नाक का संवर भला है भला है जीभ का संवर! शरीर का संवर भला है भला है वाणी का संवर! मन का संवर भला है भला है सर्वत्र संवर! (मन और काया स्कन्ध में) सर्वत्र संवर रखने वाला भिक्षु (साधक) सब दुःखों से मुक्त हो जाता है।

*यतो यतो सम्मसति, खन्धानं उदयब्बयं ।  
लभती पीतिपामोज्जं, अमृतं ते विजानतं ॥*

साधक सम्यक् सजगता के साथ जब-जब शरीर और चित्त स्कन्धों के उदय-व्यय रूपी अनित्यता की विपश्यनानुभूति करता है तब-तब प्रीति-प्रामोद रूपी अध्यात्म सुख की उपलब्धि करता है। यह जानने वालों के लिए अमृत है।

*सब्बे सङ्खारा अनिच्चा'ति, यदा पञ्चाय पस्सति ।  
अथ निब्बिन्दति दुक्खे, एस मग्गो विसुद्धिया ॥*

सभी संस्कार अनित्य हैं, यानी जो कुछ उत्पन्न होता है, वह नष्ट होता ही है। इस सच्चाई को जब कोई विपश्यना-प्रज्ञा से देखता है तो उसके सभी दुःख दूर हो जाते हैं। ऐसा है यह विशुद्धि का मार्ग !

*अनिच्चावत सङ्खारा, उप्पादवय धम्मिनो ।  
उपज्जित्वा निरुज्झन्ति, तेसं वूपसमो सुखो ॥*

सचमुच ! सारे संस्कार अनित्य ही तो हैं। उत्पन्न होने वाली सभी स्थितियाँ, वस्तु, व्यक्ति अनित्य ही तो हैं। उत्पन्न होना और नष्ट हो जाना, यह तो उनका धर्म ही है, स्वभाव ही है। विपश्यना-साधना के अभ्यास द्वारा उत्पन्न हो कर निरुद्ध होने वाले इस प्रपंच का जब पूर्णतया उपशमन हो जाता है पुनः उत्पन्न होने का क्रम समाप्त हो जाता है। वही परम सुख है। वही निर्वाण सुख है।

*सब्बो पज्जलितो लोको, सब्बो लोको प्रकम्पितो ।*

सारे लोक प्रज्वलित ही प्रज्वलित हैं। सारे लोक प्रकम्पित ही प्रकम्पित हैं।

खीणं पुराणं नव नत्थिसम्भवं, विरत्तचित्तायति के भवस्मि ।  
ते खीणबीजा अविरुद्धिहृच्छन्दा, निब्बन्ति धीरा यथायं पदीपो ॥

जिनके सारे पुराने कर्म क्षीण हो गये हैं और नयों की उत्पत्ति नहीं होती; पुनर्जन्म में जिनकी आसक्ति समाप्त हो गयी है।

वे क्षीण-बीज तृष्णा-विमुक्त अर्हत उसी प्रकार निर्वाण को प्राप्त होते हैं जैसे कि तेल समाप्त होने पर यह प्रदीप !

## अध्याय छः

## संस्कार परिच्छेद

व्यक्ति के जीवन में संस्कारों का बहुत महत्त्व है। संस्कारों से ही व्यक्ति सुसंस्कृत एवं सभ्य होता है। प्राचीन काल से लेकर मानव-समाज में संस्कारों में विश्वास चला आ रहा है। यही कारण है कि प्रत्येक देश एवं जाति में देश-काल के अनुसार संस्कार प्रचलित हैं। बौद्ध-समाज में भी संस्कारों का विधान है। आजकल सभी बौद्ध देशों में कुछ संस्कार प्रचलित हैं। भारत के बौद्धों में भी परम्परा से ये संस्कार चले आ रहे हैं। हम यहाँ क्रमशः इनका परिचय एवं पद्धति दे रहे हैं।

## गर्भमङ्गल

यह प्रथम संस्कार है, जो गर्भ स्थिर होने के तीन मास के पश्चात् अपनी सुविधा के अनुसार किया जाता है। गर्भ-मङ्गल संस्कार के दिन गर्भ-स्थित बालक या बालिका के कल्याण के लिए माता त्रिशरण सहित पञ्चशील ग्रहण करती है, बुद्ध-पूजा करती है, परित्राण-पाठ सुनती है, भिक्षुओं को भोजन-दान देती है और उपदेश सुनती है।

## नामकरण

यह द्वितीय संस्कार है, जो बालक या बालिका के जन्म होने के पश्चात् पाँचवें सप्ताह में किया जाता है। उस दिन माता स्नान करके त्रिशरण-पञ्चशील ग्रहण करती है और बच्चे को अपनी गोद में लेकर शान्तिपूर्वक बैठ कर परित्राण पाठ सुनती है। तदुपरान्त बच्चे का नाम रखा जाता है।

## अन्नपासन

यह तृतीय संस्कार है, जो जन्म के पाचवें मास में सुविधा के अनुसार किया जाता है। अन्नप्राशन संस्कार के दिन माता बच्चे के साथ नवीन वस्त्र पहन कर त्रिशरण-पञ्चशील ग्रहण करके परित्राण-पाठ सुनती है। तदुपरान्त एक कटोरी में खीर लेकर चम्मच से भिक्षु



या बौद्धाचार्य “नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स” कहते हुए बच्चे को चटाता है। उसी दिन बच्चे को बुद्ध-मूर्ति का दर्शन कराते एवं बुद्ध-पूजा करते हैं।

### केसकप्पन

यह चतुर्थ संस्कार है, जो बच्चे के जन्म के तीन वर्ष के भीतर अपनी सुविधा के अनुसार किया जाता है। यह संस्कार किसी बौद्ध विहार, पूजनीय स्थान अथवा घर में भी होता है। पहले भिक्षु या बौद्धाचार्य कैंची से बच्चे के दो-चार बाल काटते हैं, तदुपरान्त बाल बनाने वाला व्यक्ति सावधानी से बच्चे के सिर का मुंडन करता है। बालों को आटे की लोई में रखकर उसी लोई से बच्चे का सिर पोंछ लिया जाता है। फिर उस लोई को किसी मैदान में गाढ़ दिया जाता है अथवा किसी नदी में प्रवाहित कर दिया जाता है। मुंडन हो जाने पर बच्चे को स्नान करा नवीन वस्त्र पहनाते हैं और माता या पिता उसे गोदमें लेकर त्रिशरण-पञ्चशील ग्रहण करते, परित्राण पाठ सुनते और कुछ दान करते हैं। सायंकाल मन्दिर में जाकर पुष्प-धूप-दीप के साथ बुद्ध-पूजा करते हैं।

### कण्णविज्जन

यह पञ्चम संस्कार बच्चे के कान छेदे जाने का है। यह जन्म के पाँचवें वर्ष में होता है। कभी-कभी केसकप्पन तथा कण्णविज्जन एक ही साथ भी किये जाते हैं। इस संस्कार के दिन भी त्रिशरण-पञ्चशील लिया और परित्राण-पाठ सुना जाता है। तदुपरान्त बच्चे का कान किसी चतुर व्यक्ति से छिद्वा कर बाली आदि पहना दी जाती है।

### विज्जारम्भ

यह छठवाँ संस्कार है, जो जन्म के पाँचवें या सातवें वर्ष में होता है। उस दिन बच्चे को मन्दिर में ले जाकर बुद्ध-पूजन कराते हैं, फिर त्रिशरण-पञ्चशील ग्रहण कराते हैं। तदुपरान्त भिक्षु और बौद्धाचार्य पट्टी या स्लेट पर बच्चे के हाथ में खरिया की पत्ती पकड़ा कर अपने हाथ के सहारे उससे ‘बुद्धं सरणं गच्छामि, धम्मं सरणं गच्छामि, संघं सरणं गच्छामि’ लिखवाते हैं। इसे विज्जारम्भ संस्कार कहते हैं। तदुपरान्त बालक सुविधानुसार किसी विद्यालय में जाकर विद्याध्ययन कर सकता है।

## विवाह

यह सातवाँ महत्वपूर्ण संस्कार है। गृहस्थ जीवन की आधार-शिला इसे ही मानते हैं। विवाह संस्कार में कोई भी योग्य गृहस्थ (= बौद्धचार्य) वर-कन्या को विशरण-पञ्चशील प्रदान करता है, फिर परित्राण पाठ कराता है। इसके पश्चात् पति-पत्नी के पारस्परिक कर्तव्यों को समझाते हुए इस प्रकार कहता है :

### पति के कर्तव्य

प्रिय उपासक! आप सावधान होकर सुनें। भगवान् बुद्ध ने पति द्वारा पत्नी के लिए ये पाँच कर्तव्य बतलाए हैं :—

1. *सम्माननाय* — आपको अपनी पत्नी का सम्मान करना चाहिए।
2. *अनवमाननाय* — आपको अपनी पत्नी का अपमान नहीं करना चाहिए।
3. *अनतिचरियाय* — आपको मिथ्याचार नहीं करना चाहिए।
4. *इत्सरियवोस्सगेन* — आप धन-दौलत से अपनी पत्नी को सन्तुष्ट रखेंगे।
5. *अलङ्कारानुपदानेन* — आप अपनी पत्नी को आभूषण आदि देकर प्रसन्न रखेंगे।

### पत्नी के कर्तव्य

सौभाग्यवती उपासिके! आप सावधान होकर सुनें। भगवान् बुद्ध ने पत्नी द्वारा पति के लिए पाँच कर्तव्य बतलाए हैं :—

1. *सुसंविहित कम्मन्ता* — आपको अपने घर के सब कामों को भली प्रकार करना चाहिए।
2. *संगहित परिजना* — आपको अपने परिवार, परिजन और नौकर-चाकरों को प्रसन्न तथा वश में रखना चाहिए।
3. *अनतिचारिणी* — आपको मिथ्याचार से विरत रहकर अपने पति का विश्वासपात्र बनना चाहिए।
4. *सम्भतं अनुरक्खनं* — आप को अपने पति के उपार्जित धन-दौलत की रक्षा करनी चाहिए।
5. *दक्खा च अनलवसा च सब्बकिच्चेसु* — आप को घर के सभी कार्यों में दक्ष तथा आलस रहित होना चाहिए।

इसके पश्चात् प्रदेश के रिवाज के अनुसार पति पत्नी को अँगूठी पहना देता है या सिर में सिन्दूर लगा देता है। तदुपरान्त बौद्धाचार्य महामङ्गल-गाथा द्वारा दोनों को आशीर्वाद देकर दोनों के हाथ में परित्र-सूत्र बाँध देता है और इस गाथा का पाठ कर विवाह-संस्कार सम्पन्न करता है —

*इच्छितं पत्थितं तुह्यं खिप्पमेव समिञ्जतु ।  
सब्बे पूरेन्तु चित्तसंकप्पा चन्दो पन्नरसो यथा ।।*

तुम्हारी इच्छित और प्रार्थित सब वस्तुएँ तुम्हें शीघ्र प्राप्त हों। तुम्हारे चित्त के सब संकल्प पूर्णमासी के चन्द्रमा की तरह पूर्ण हों।

### प्रव्रज्या

बौद्धधर्म में प्रचलित रीति के अनुसार जीवन में एक बार सबको प्रव्रजित होना चाहिए। प्रव्रजित हुए व्यक्ति को श्रामणेरे (= सामणेरे) कहते हैं। श्रामणेरे को दस शीलों का पालन करना होता है। श्रामणेरे-दीक्षा तीन दिन, पाँच दिन, सात दिन, पन्द्रह दिन से लेकर एक-दो वर्ष तक की भी होती है। इस दीक्षा को ग्रहण कर विहार में भिक्षुओं के साथ रह कर ध्यान-भावना एवं मनन-अध्ययन में समय बिताया जाता है। यह दीक्षा किसी भिक्षु से ही ग्रहण की जा सकती है। इस दीक्षा को कोई गृहस्थ नहीं दे सकता। इसे जीवन में जब कभी भी सुविधानुसार ग्रहण किया जा सकता है। इसकी विधि भिक्षुओं को ज्ञात होती है। विनय पिटक में इसका पूरा वर्णन है। अतः हम उसे यहाँ नहीं दे रहे हैं।

### उपसम्पदा

यह दीक्षा उन श्रामणेरो अथवा व्यक्तियों को दी जाती है जो जीवन पर्यन्त भिक्षु रहना चाहते हैं। उपसम्पन्न भिक्षु के लिए 227 नियम हैं जिनका पालन उन्हें करना होता है। यह दीक्षा मध्यदेश (= उत्तर प्रदेश और बिहार) में 10 भिक्षुओं द्वारा सम्पन्न होती है तथा अन्य प्रदेशों में 5 भिक्षुओं द्वारा। इस दीक्षा के लिए 20 वर्ष की आयु का होना अनिवार्य है। इस दीक्षा की विधि भी विनय पिटक में विस्तार-पूर्वक दी है।

## दाहकम्म तथा मतकभत्त

यह अन्तिम संस्कार है। जब कोई मरने के सन्निकट होता है तो उसे परित्राण-पाठ सुनाते हैं और यदि वह परित्राण-पाठ सुनते-सुनते मर जाय तो बड़ा शुभ मानते हैं।

मृतक को श्मशान में ले जाने से पूर्व नहलाते, सुगन्धित द्रव्य लगाते और कफन देते हैं। तदुपरान्त भिक्षु को बुलाते हैं। (भिक्षु के न होने पर योग्य बौद्धगृहस्थ भी इस कार्य को कर सकते हैं) वहाँ उपस्थित सभी व्यक्ति त्रिशरण-पञ्चशील ग्रहण करते हैं और उसके बाद भिक्षु को एक श्वेत वस्त्र दान करते हैं, जिसे 'मतकवत्थ' (= मृतकवस्त्र) कहते हैं।<sup>1</sup>

मृतक के घर का कोई व्यक्ति एक गिलास में जल लेकर एक थाली में धीरे-धीरे गिराता हैं। सभी सम्बन्धी या परिवार के लोग अपना हाथ गिलास में लगाये रहते हैं और इस प्रकार तीन बार कहते हैं :-

इदं नो आतीनं होतु, सुखिता होन्तु आतयो।

यह पुण्य-कर्म हमारे ज्ञाति के लिए हो, हमारे ज्ञाति लोग सुखी हों।  
तदुपरान्त भिक्षु इन गाथाओं का पाठ करता है —

उन्नमे उदकं वट्ठं यथा भिन्नं पवत्तति।  
एवमेव इतो दिन्नं पेतानं उपकप्पति ॥1॥  
यथा वारिवहा पूरा परिपूरेन्ति सागरं।  
एवमेव इतो दिन्नं पेतानं उपकप्पति ॥2॥  
इच्छितं पत्थितं तुहं खिप्पमेव समिज्झतु।  
सब्बे पूरेन्तु चित्तसंकप्पा चन्दो पन्नरसो यथा ॥3॥  
आयुरारोग्य सम्पत्ति, संग्गसम्पत्तिमेव च।  
ततो निब्बानसम्पत्ति, इमिना ते समिज्झतु ॥4॥

जिस प्रकार ऊँचे स्थल पर गिरा पानी नीचे बह जाता है, उसी प्रकार यहाँ दिया गया सब पुण्य मरे हुए लोगों को प्राप्त होता है ॥1॥

जिस प्रकार भारी हुई नदियाँ समुद्र को भर देती हैं, उसी प्रकार यहाँ दिया गया पुण्य मरे हुए लोगों को प्राप्त होता है ॥2॥

तुम्हारी इच्छित और प्रार्थित सब वस्तुएँ तुम्हें शीघ्र प्राप्त हों। तुम्हारे चित्त के सब संकल्प पूर्णमासी के चन्द्रमा की तरह पूर्ण हों ॥३॥

इस पुण्यकर्म से तुम्हें आयु, आरोग्यता, स्वर्ग और निर्वाण का सुख प्राप्त हो ॥४॥

इसके पश्चात् भिक्षु इस गाथा का पाठ करके धार्मिक उपदेश देते हुए संसार की अनित्यता पर प्रकाश डालता है।

*अनिज्जा वत सङ्खारा उप्पादवय-धम्मिनो ।  
उप्पज्जित्वा निरुज्जन्ति तेसं वूपसमो सुखो ॥*

सभी संस्कार अनित्य हैं, उत्पन्न और नष्ट होना उनका स्वभाव है। उत्पन्न होकर वे शान्त हो जाते हैं। उनका सर्वथा शान्त हो जाना परम सुख है।

इसके पश्चात् मृतक की अर्थी श्मशान में ले जानी चाहिए। वहाँ चिता बनाकर उस पर शव को रखना चाहिए। वहाँ पर भी त्रिशरण-पंचशील ग्रहण करके बुद्ध, धर्म और संघ के गुणों का स्मरण करते हुए तीन बार चिता की प्रदक्षिणा करके कुछ सुगन्धित वस्तुओं के साथ चिता में आग लगानी चाहिए। चिता के जल जाने पर बड़े लोगों की अस्थियों (फूल) को एकत्र कर लेना चाहिए और उनपर उनके सम्मान के लिए एक छोटा स्तूप बनवाना चाहिए। जिनमें शव-दाह करने की सामर्थ्य नहीं है वे शव को भूमि में गाढ़ भी सकते हैं।

मृत्यु के सातवें, दसवें या बारहवें दिन मृत व्यक्ति के पुण्य के लिए भिक्षुओं को मतक-भक्त (श्राद्ध) देते हैं। भिक्षुओं के अभाव में भिखारियों, परिवार के लोगों तथा विद्वान् गृहस्थों को भोज कराते हैं।

भिक्षुओं को भोजन दान देने से पूर्व त्रिशरण-पंचशील ग्रहण करके हाथ जोड़ कर इस प्रकार कहते हैं—

*कालकतानं अम्हाकं जातीनं पुज्जत्थाय इमं भिक्खं भिक्खु संघस्स देम ।*

मरे हुए अपने जातियों के पुण्य के लिए इस भिक्षा को भिक्षुसंघ को देते हैं।

तदुपरान्त 'इदं नो जातीनं होतु, सुखिता होन्तु जातियों' तीन बार कह कर एक थाली में गिलास से जल गिराते हैं और भिक्षु 'उन्नमे उदकं वट्ठं' आदि गाथा को पढ़ते जाते हैं।

भोजनोपरान्त भिक्षु परित्राण-पाठ करते तथा उपदेश देते हैं। जाते समय गृहस्थ हाथ जोड़कर उन्हें प्रणाम करते हैं। प्रणाम करते समय भिक्षु इस गाथा को बोलते हैं —

अभिवादनसीलिस्स निच्चं वद्धापचायिनो ।  
वतारो धम्मा वड्ढन्ति आयु वण्णो सुखं बलं ।

जो अभिवादनशील है, जो सदा वृद्धों की सेवा करने वाला है, उसकी चार बातें बढ़ती हैं — आयु, वर्ण, सुख और बल।

## अध्याय सात

### त्यौहार परिच्छेद

बौद्धधर्म में प्रतिमास में चार दिन उपोसथ-व्रत रहने के लिए नियत हैं — दोनों पक्षों की अष्टमी, पूर्णिमा और अमावस्या। उस दिन अष्टशील का पालन किया जाता है। इनके अतिरिक्त वर्ष में चार महापर्व हैं — (1) वैशाखी पूर्णिमा (2) आषाढी पूर्णिमा (3) आश्विन पूर्णिमा (4) माघी पूर्णिमा। बर्मा में ज्येष्ठ पूर्णिमा के दिन भी त्यौहार मनाया जाता है। त्यौहार के दिन त्रिरत्न पूजा, दान, शील और भावना आदि पुण्य कर्मों को करते हैं। उस दिन अष्टशील का पालन महाफलदायी समझा जाता है।

#### वैशाखी पूर्णिमा

इसी दिन तथागत का लुम्बिनी में जन्म हुआ था। इसी दिन उन्होंने उरुवेला में बोधि वृक्ष के नीचे बैठे हुए बुद्धत्व प्राप्त किया था और इसी दिन कुशीनगर में जोड़े शाल वृक्षों के मध्य उनका महापरि-निर्वाण हुआ था। अतः यह दिन तीन प्रकार से पवित्र है और बौद्धों के लिए महापर्व है। इस दिन सारे संसार के बौद्ध बुद्धजयन्ती समारोह मनाते हैं।

#### ज्येष्ठ पूर्णिमा

इस दिन भगवान् ने कपिलवस्तु में महासमय सुत्त का उपदेश दिया था। बौद्ध देशों में इस पर्व को भी समारोह के साथ मनाते हैं।

#### आषाढी पूर्णिमा

इसी दिन बोधिसत्व ने महामाया देवी के कोख में प्रवेश किया था। इसी दिन महाभिनिष्क्रमण किया था और इसी दिन ऋषिपतन मृगदाय (सारनाथ) में धर्मचक्र-प्रवर्तन किया था।

इसी दिन भिक्षु वर्षावास का अधिष्ठान करते हैं और तीन मास तक एक ही स्थान पर रहने का व्रत ग्रहण करते हैं।

## आश्विन पूर्णिमा

इसी दिन भगवान् बुद्ध तावतिस देवलोक में अपनी माता महामाया और देवताओं को अभिधर्म का उपदेश देकर तीन मास के पश्चात् शंकास्य नगर में पृथ्वी पर उतरे थे तथा इसी ही दिन भिक्षु वर्षावास समाप्त कर प्रवारणा करते हैं। बौद्ध देशों में इस दिन बड़ी धूमधाम के साथ प्रवारणोत्सव मनाया जाता है।

## माघी पूर्णिमा

इसी दिन भगवान् ने वैशाली के सारन्दर चैत्य में आयु-संस्कार का त्याग किया था और घोषणा की थी — 'आज से तीन मास के पश्चात् तथागत का परिनिर्वाण होगा।'

इनके अतिरिक्त कुछ विशेष पर्व हैं, जो ऋतु आदि से सम्बन्धित हैं। इन दिनों बौद्ध गृहस्थ विशेषरूप से पुण्यानुष्ठान करते हैं और आनन्द मानते हैं।

## नाग पंचमी

यह त्यौहार श्रावण शुक्ल पंचमी को मनाया जाता है। यह भारतवर्ष की प्राचीन इतिहास-प्रसिद्ध सुसभ्य नाग जाति का त्यौहार है। नाग जाति के लोग भगवान् बुद्ध के बड़े भक्त थे। इस दिन खीर से भगवान् बुद्ध की पूजा करते हैं, शील ग्रहण करते हैं और धर्म-श्रवण करते हैं भिक्षुओं को भोजन-दान देते तथा आनन्द मनाते हैं।

## विजया दशमी

यह पर्व आश्विन शुक्ल दशमी को मनाते हैं। इसी दिन सम्राट अशोक ने कलिंग-विजय करके यह प्रतिज्ञा की थी कि अब मैं शस्त्र के द्वारा हिंसात्मक विजय न करके धर्म-प्रचार के द्वारा अहिंसात्मक विजय करूँगा। हिंसापूर्ण युद्धों से पीड़ित जनता महान् बौद्ध सम्राट की इस घोषणा को सुनकर बहुत हर्षित हुई और इस महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक दिन को सदा स्मरण रखने के लिए इस दिन को पर्व बना लिया। इस दिन बुद्ध-पूजा, शील-ग्रहण, धर्म-श्रवण और दान आदि पुण्य-कार्य कर उत्सव मनाते हैं।

## दीपावली

यह त्यौहार कार्तिक कृष्ण अमावस्या को होती है। यह ऋतु-पर्व है। वर्षा समाप्त होने पर घरों की सफाई की जाती है। बुद्ध-पूजा, शील-ग्रहण और भोजन-दान किया जाता है। रात्रि



में मन्दिर, घर, बोधिवृक्ष और चैत्य के पास दीपक जला कर दीपावली का उत्सव मनाते हैं।

## वसन्त

यह त्यौहार माघ शुक्ल पंचमी को होता है। यह भी ऋतु पर्व है। इस दिन सरसों के पीले फूल और खीर से बुद्ध-पूजा की जाती है। भिक्षुओं की केसरिया रंग की खीर एवं भोजन-दान देते हैं। बुद्ध-पूजा, शीलग्रहण और धर्म-श्रवण कर आनन्द मनाते हैं।

## होली

यह त्यौहार फाल्गुन पूर्णिमा को मनाया जाता है। यह भी ऋतु पर्व है। इस समय शीतकाल की समाप्ति होती है, अतः जाड़े के कपड़े बदल कर नये वसन्त और ग्रीष्म के कपड़े पहने जाते हैं और नये अन्न का भोजन किया जाता है। इस दिन बुद्ध-पूजा, शील-ग्रहण और भोजनदान करने के उपरान्त बुद्ध-गीत गाते हैं तथा इत्र और सुगन्धित जल एक दूसरे पर डालते हैं। परस्पर प्रेमपूर्वक मिलते तथा पान, गरी और छुहारा एक दूसरे को देते हैं। कहीं-कहीं यह उत्सव जल-क्रीड़ा एवं बुद्ध-कीर्तन के रूप में भी मनाया जाता है।

## अध्याय आठ

## तीर्थ परिच्छेद

बौद्धधर्म में चार महातीर्थ हैं (1) **लुम्बिनी (नेपाल में)** — यहाँ तथागत का जन्म हुआ था। (2) **बुद्धगया (विहार)** — यहाँ सिद्धार्थ गौतम ने बुद्धत्व प्राप्त किया था। (3) **सारनाथ (इसिपतन मिगदाय, वाराणसी, उत्तर प्रदेश)** — यहाँ तथागत ने सर्वप्रथम 'धर्मचक्र प्रवर्तन सूत्र' का उपदेश पञ्चवर्गीय भिक्षुओं को दिया था। (4) **कुशीनगर (उत्तर प्रदेश)** — यहाँ पर तथागत का महापरिनिर्वाण हुआ था।

उपरोक्त चार बौद्ध तीर्थ स्थानों का विवरण हमें भगवान् बुद्ध द्वारा उपदेशित 'महापरिनिर्वाण सूत्र' (तथागत द्वारा अंतिम उपदेश) के रूप में प्राप्त होता है।

तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व सम्राट अशोक के समय धर्म यात्रा का महत्व और बढ़ गया। सम्राट अशोक ने अपने शासन काल में धर्म के प्रचार-प्रसार हेतु अपने प्रशासन में 'धर्म-महामात्र्यों' की नियुक्ति की। इनका कार्य धर्म का प्रचार-प्रसार तथा उसका अनुसरण करना था। धर्म यात्राओं को और व्यापक बनाने हेतु सम्राट अशोक ने उन चार महत्वपूर्ण स्थानों को भी जोड़ा जहाँ भगवान् बुद्ध ने अपने जीवन काल में अद्भुत चमत्कार दिखाए थे। ये स्थान निम्न हैं (1) **गुद्धकूट, राजगृह (राजगीर)** यहाँ भगवान् बुद्ध ने कई महत्वपूर्ण उपदेश दिए तथा अनेक अद्भुत चमत्कार दिखाए जिसमें नालागिरी नामक मदमस्त हाथी को वश में करना प्रमुख है। (2) **श्रावस्ती** कौशल राजाओं की राजधानी। भगवान् बुद्ध ने यहाँ अनेक धर्म उपदेश दिए तथा अद्भुत चमत्कार दिखाये। (3) **वैशाली**

लिच्छवी राजाओं की राजधानी थी। भगवान् बुद्ध ने यहाँ अनेक धर्म उपदेश दिए तथा आश्चर्यजनक चमत्कार दिखाए। जब वैशाली में महामारी का प्रकोप हुआ था। तब तथागत के निर्देशानुसार लोक कल्याण हेतु आनन्द द्वारा 'रतन सूत्र' का पारायण भी किया गया। (4) **संकास्य** संकास्य एक पुरातन भारत में शहर था जो कि आज के सिकेस बसन्तपुर नामक स्थान, फर्रुखाबाद जिले में स्थित है। 'सुत्त निपात अट्ठकथा' के अनुसार इस स्थान पर भगवान् बुद्ध तावतिस लोक में अभिधर्म की देशना कर पृथ्वी लोक में लौटे थे। तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व सम्राट अशोक ने यहाँ एक स्तूप व स्तंभ की स्थापना की जिससे इस स्थान का महत्व पता चलता है।

सम्राट अशोक भगवान् बुद्ध की शिक्षा से इतने प्रभावित थे कि उन्होंने उसे अपने जीवन में उतारा और अपने सुदृढ़ शासन की व्यापकता को धर्म का आधार दिया। उन्होंने अन्य राजाओं के साथ सौहार्द एवं मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित किये और धर्म का सहारा

लिया। उनके जीवन काल में 'तीसरी बौद्ध संगीति' बुलाई गयी जिसका नेतृत्व भन्ते मोग्गलीपुत्त तिस्स थेर ने किया। इस संगीति में समस्त बुद्ध वाणी का संगायन पाटलिपुत्र (आज के पटना, बिहार) में किया गया। इसके पश्चात् नौ अलग-अलग स्थानों में सम्राट अशोक ने प्रबुद्ध भिक्षुओं को धर्मदूतों के रूप में धर्म प्रसार हेतु भेजा। ये नौ स्थान निम्न हैं (1) **कश्मीर गन्धार** (मज्झन्तिक थेर), (2) **महिस मंडल** (महादेव थेर), (3) **वनवासी** (रक्खित थेर), (4) **अपरन्तक** (धम्म रक्खित थेर), (5) **महारट्ट** (महाधम्म रक्खित), (6) **योन** (महारक्खित थेर), (7) **हिमवन्त** (मज्झिम थेर), (8) **सुवण्ण भूमि** (सोणथेर, उत्तर थेर), (9) **लंका दीप** (महिन्द थेर, संघमिता थेरी)।

सम्राट अशोक ने भगवान् बुद्ध की शिक्षा को समस्त संसार में मानव कल्याण, आपसी सौहार्द, सुख-शान्ति के लिये पुनःस्थापित किया इस लिये उन्हें आज 'धम्म अशोक' के नाम से जाना जाता है।



*“Wherever the Buddha’s teachings have flourished,  
either in cities or countrysides,  
people would gain inconceivable benefits.  
The land and people would be enveloped in peace.  
The sun and moon will shine clear and bright.  
Wind and rain would appear accordingly,  
and there will be no disasters.  
Nations would be prosperous  
and there would be no use for soldiers or weapons.  
People would abide by morality and accord with laws.  
They would be courteous and humble,  
and everyone would be content without injustices.  
There would be no thefts or violence.  
The strong would not dominate the weak  
and everyone would get their fair share.”*

**\* THE BUDDHA SPEAKS OF  
THE INFINITE LIFE SUTRA OF  
ADORNMENT, PURITY, EQUALITY  
AND ENLIGHTENMENT OF  
THE MAHAYANA SCHOOL \***

## **Taking Refuge with a mind of Bodhichitta**

**In the Buddha, the Dharma and the Sangha,  
I shall always take refuge  
Until the attainment of full awakening.**

**Through the merit of practicing generosity  
and other perfections,  
May I swiftly accomplish Buddhahood,  
And benefit of all sentient beings.**

## **The Prayers of the Bodhisattvas**

**With a wish to awaken all beings,  
I shall always go for refuge  
To the Buddha, Dharma, and Sangha,  
Until I attain full enlightenment.**

**Possessing compassion and wisdom,  
Today, in the Buddha's presence,  
I sincerely generate  
the supreme mind of Bodhichitta  
For the benefit of all sentient beings.**

**"As long as space endures,  
As long as sentient beings dwell,  
Until then, may I too remain  
To dispel the miseries of all sentient beings."**

**GREAT VOW**  
**BODHISATTVA EARTH-TREASURY**  
**( BODHISATTVA KSITIGARBHA )**

**“ Unless Hells become empty,  
I vow not to attain Buddhahood;  
Till all have achieved the Ultimate Liberation,  
I shall then consider my Enlightenment full !”**

**Bodhisattva Earth-Treasury is  
entrusted as the Caretaker of the World until  
Buddha Maitreya reincarnates on Earth  
in 5.7 billion years.**

**Reciting the Holy Name:  
NAMO BODHISATTVA KSITIGARBHA**

**Karma-erasing Mantra:  
OM BA LA MO LING TO NING SVAHA**

# **TAKING REFUGE IN THE TRIPLE JEWELS**

To the Buddha I return and rely,  
returning from delusions and  
relying upon Awareness and Understanding.

To the Dharma I return and rely,  
returning from erroneous views and  
relying upon Proper Views and Understanding.

To the Sangha I return and rely,  
returning from pollutions and disharmony and  
relying upon Purity of Mind and  
the Six Principles of Living in Harmony.

.....

**Be mindful of Amitabha!  
Namo Amitabha!  
Homage to Amita Buddha!**

**May every living being, drowning and adrift,  
Soon return to the Pure Land of Limitless Light!**



With bad advisors forever left behind,  
From paths of evil he departs for eternity,  
Soon to see the Buddha of Limitless Light  
And perfect Samantabhadra's Supreme Vows.

The supreme and endless blessings  
of Samantabhadra's deeds,  
I now universally transfer.  
May every living being, drowning and adrift,  
Soon return to the Pure Land of Limitless Light!

**\* The Vows of Samantabhadra \***

I vow that when my life approaches its end,  
All obstructions will be swept away;  
I will see Amitabha Buddha,  
And be born in His Western Pure Land of  
Ultimate Bliss and Peace.

When reborn in the Western Pure Land,  
I will perfect and completely fulfill  
Without exception these Great Vows,  
To delight and benefit all beings.

**\* The Vows of Samantabhadra Avatamsaka Sutra \***

## DEDICATION OF MERIT

May the merit and virtue  
accrued from this work  
adorn Amitabha Buddha's Pure Land,  
repay the four great kindnesses above,  
and relieve the suffering of  
those on the three paths below.  
May those who see or hear of these efforts  
generate Bodhi-mind,  
spend their lives devoted to the Buddha Dharma,  
and finally be reborn together in  
the Land of Ultimate Bliss.  
Homage to Amita Buddha!

## NAMO AMITABHA

南無阿彌陀佛

《印度 HINDI 及 PALI 文 : BAUDDHA CARIYĀ VIDDHI

(DAILY BUDDHIST CHANTS)》

財團法人佛陀教育基金會 印贈

台北市杭州南路一段五十五號十一樓

Printed and donated for free distribution by

**The Corporate Body of the Buddha Educational Foundation**

11F., 55 Hang Chow South Road Sec 1, Taipei, Taiwan, R.O.C.

Tel: 886-2-23951198 , Fax: 886-2-23913415

Email: [overseas@budaedu.org](mailto:overseas@budaedu.org)

Website: <http://www.budaedu.org>

Mobile Web: [m.budaedu.org](http://m.budaedu.org)

**This book is strictly for free distribution, it is not to be sold.**

यह पुस्तिका विनामूल्य वितरण के लिए है बिक्री के लिए नहीं ।

Printed in Taiwan

60,000 copies; September 2017

IN079 - 15314